बीईसीसी–133

समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–I

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

विशेषज्ञ समीति

प्रो० अतुल शर्मा (सेवानिवृत) पूर्व निदेशक भारतीय सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली	प्रो० एम.एस. भट्ट (सेवानिवृत) जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली	डॉ० अनुप चटर्जी (सेवानिवृत) ए.आर.एस.डी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ० सुरजीत दास सी.ई.एस.पी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	डॉ० मजुँला सिंह सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली	प्रो० बी. एस. प्रकाश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
प्रो० कौस्तुभ बारिक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली		

पाठ्यक्रम संयोजक समीति

खण्ड / इकाई शीर्षक		इकाई लेखन एवं हिंदी अनुवादक
खण्ड 1	**समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय और राष्ट्रीय आय लेखा**	
इकाई 1	**मुद्दे एवं संकल्पनाएँ**	प्रो० कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – श्री कुमुद कुमार
इकाई 2	**राष्ट्रीय आय लेखांकन**	डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज (संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा
इकाई 3	**आर्थिक निष्पादन के माप**	
खण्ड 2	**सकल घरेलू उत्पाद का निर्धारण**	
इकाई 4	**पारम्परिक और केंजीय सिद्धांत**	प्रो० कौस्तुभ बारिक एवं डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
इकाई 5	**आय निर्धारण का केंजीय प्रतिमान**	डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
खण्ड 3	**खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण**	
इकाई 6	**केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति**	डॉ० निधि तेवतिया, सहायक प्राध्यापक, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
इकाई 7	**बाह्य क्षेत्र**	प्रो० कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** – डॉ० तरूण माँझी
खण्ड 4	**आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा**	
इकाई 8	**मुद्रा के कार्य**	सुश्री प्रीति अग्रवाल, सहायक प्राध्यापक, कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय। **हिंदी अनुवाद** –श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा (इकाई 8 एवं 9) डॉ० तरूण माँझी (इकाई 10)
इकाई 9	**मुद्रा की मांग**	
इकाई 10	**मौद्रिक नीति**	

पाठ्यक्रम संचालक: प्रो० कौस्तुभ बारिक **संपादक: प्रो० कौस्तुभ बारिक एवं डॉ० जगन्नाथ मलिक**

अनुवाद पुनः निरीक्षणः श्री भवानी शंकर बागला

सामग्री निर्माण

सितम्बर, 2020

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी(चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमाकें के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट : http://www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की तरफ से निदेशक सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेज़र टाईप सेट: मुकेश कुमार यादव **आवरण सज्जा** : संदीप मैनी **मुद्रण:**

विषय–सूची

खंड 1	समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय और राष्ट्रीय आय लेखा	पृष्ठ संख्या
इकाई 1	मुद्दे एवं संकल्पनाएँ	5
इकाई 2	राष्ट्रीय आय लेखांकन	18
इकाई 3	आर्थिक निष्पादन के माप	36
खंड 2	सकल घरेलू उत्पाद का निर्धारण	
इकाई 4	पारम्परिक और केंजीय सिद्धांत	52
इकाई 5	आय निर्धारण का केंजीय प्रतिमान	67
खंड 3	खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण	
इकाई 6	केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति	79
इकाई 7	बाह्य क्षेत्र	92
खंड 4	आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा	
इकाई 8	मुद्रा के कार्य	103
इकाई 9	मुद्रा की मांग	112
इकाई 10	मौद्रिक नीति	123
शब्दावली		136
कुछ उपयोगी पुस्तकें		146

पाठ्यक्रम परिचय

समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें हम समूचे अर्थव्यवस्था व्यापी स्तर पर उत्पादन, आय, मुद्रा की आपूर्ति, बचत, निवेश, निर्यात एवं आयात जैसे समुच्चय चरों के क्रियाकलाप का अध्ययन करते हैं।

हमें, व्यष्टि अर्थशास्त्र से इतर, समष्टि अर्थशास्त्र पढ़ने की आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि समुदायों का क्रियाकलाप घटकों के क्रियाकलाप से कहीं अधिक जटिल हो सकता है। आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी, राजकीय ऋण एवं भुगतान शेष जैसे वृहत्तर विषयों का अध्ययन केवल समष्टि–अर्थशास्त्रीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इस प्रकार, समष्टि अर्थशास्त्र हमें तीन पहलुओं से मदद करता है, यथा–(i) सामूहिक आर्थिक चरों के बीच संबंध को समझना, (ii) अर्थव्यवस्था के कार्य–निष्पादन का मूल्यांकन करना, और (iii) आर्थिक नीति का निरूपण करना।

जैसा कि पाठ्यक्रम का शीर्षक इंगित करता है, यह पाठ्यक्रम अपनी प्रकृति में परिचयात्मक है। आप समष्टि अर्थशास्त्र को दो पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेगें। ये पाठ्यक्रम है – बीईसीसी 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धाँत–I, और समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धाँत–II। प्रस्तुत पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभाजित है।

खण्ड 1, जिसका शीर्षक है –**समष्टि अर्थशास्त्र में चर्चित विषय और राष्ट्रीय आय लेखा**, समष्टि अर्थशास्त्र के मूल मुद्दों से आरंभ होकर समष्टि अर्थशास्त्र में बारंबार प्रयुक्त कुछ संकल्पनाओं को स्पष्ट करता है। प्रथम इकाई का उद्देश्य एक विहंगावलोकन प्रस्तुत कर शिक्षार्थियों के बीच कुछ जिज्ञासा उत्पन्न करना है। अनुवर्ती दो इकाइयों में, हम आय के वर्तुल प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय के मापन संबंधी संकल्पनाओं का अध्ययन करेंगे।

खण्ड 2 का शीर्षक है **सकल घरेलू उत्पाद का निर्धारण**। यह खण्ड अर्थव्यवस्था का परंपरागत प्रतिमान एवं केंजीय मॉडल विषयक एक संक्षिप्त अवधारणा से आरंभ होता है। यह इन दोनों ही विचारधाराओं के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। इसके पश्चात यह केंन्स के आय निर्धारण मॉडल का वर्णन करता है।

खण्ड 3 का शीर्षक है **खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण**। इस खण्ड की दो इकाइयों में, हम दो महत्वपूर्ण मुद्दे अर्थात सरकारी क्षेत्र एवं बाह्य क्षेत्र का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव की चर्चा करेगें। प्रथम इकाई सरकारी क्षेत्र में व्यय एवं करों के प्रभाव को दर्शाती है। द्वितीय इकाई अर्थव्यवस्था पर अंतराष्ट्रीय बहावों की व्याख्या करती है तथा निर्यात–आयात का आय के निर्धारण पर प्रभाव को दर्शाती है।

खण्ड 4, किसी आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा, मुद्रा की परिभाषा एवं प्रकार्य प्रस्तुत कर मुद्रा की आपूर्ति का मापन करता है। तदंतर, इसमें मुद्रा के परिमाण सिद्धांत संबंधी प्राधार में मुद्रा की आपूर्ति और कीमत स्तर के बीच संबंध पर चर्चा की गई है। इस खण्ड में मौद्रिक नीति एक अर्थव्यवस्था में कैसे कार्य करती है, यह भी समझाया गया है।

इकाई 1 मुद्दे एवं संकल्पनाएँ *

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 विषय प्रवेश

1.2 समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों करें ?

1.3 कुछ संकल्पनाएँ

1.3.1 स्टॉक और प्रवाह

1.3.2 अल्पावधि एवं दीर्घावधि

1.3.3 आर्थिक प्रतिमान

1.3.4 वृद्धि दर

1.4 उत्पादन संभाव्यता वक्र

1.5 आर्थिक संवृद्धि का महत्व

1.6 मुद्रास्फीति एवं बेरोज़गारी

1.7 व्यापार–चक्र

1.8 सार संक्षेप

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि

- व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें;
- समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व समझ सकें;
- उत्पादन संभाव्यता वक्र की संकल्पना को स्पष्ट कर सकें; तथा
- मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी एवं व्यापारचक्र जैसे मुद्दों का विहंगावलोकन प्रस्तुत कर सकें।

1.1 विषय प्रवेश

अब तक आप 'व्यष्टि अर्थशास्त्र' से परिचित रहे हैं, जिसमें परिवार एवं फर्म जैसे आर्थिक अभिकर्ताओं से संबद्ध विषय आते हैं। परिवारों के संदर्भ में, हमारा मुख्य विषय बजट संरोध के अधीन उपयोगिता अधिकतमीकरण होता है। इसी प्रकार, फर्मों के संदर्भ में, हमारा मुद्दा किसी संसाधन संरोध के अधीन लाभ अधिकतमीकरण (अथवा उसका द्वय, लागत न्यूनतमीकरण) होता है। विभिन्न आरेखों के माध्यम से आपने सीखा कि किस प्रकार परिवार विकल्प चुनते हैं। किन संराधों का वे सामना करते हैं, किस प्रकार वे उपभोग के अपने इष्टतम स्तरों तक पहुँचते हैं, किसी भी परिवार के समक्ष इष्टतमीकरण समस्या को आरेखों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है और गणितीय विधियों, खासकर रेखीय बीजगणित, द्वारा भी उसे हल किया जा सकता है।

* प्रो॰ कौस्तुभ बारिक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

इसी प्रकार का उपचार फर्मों के क्रियाकलाप संबंधी विश्लेषण हेतु किया जाता है, जहाँ फर्में आदानों की कीमतें एवं अपने उपलब्ध संसाधन ज्ञात होने पर अपना उत्पादन स्तर अधिकतम करती हैं। एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से मस्तिष्क में उभरता है–'क्या यही अधिकतमीकरण समस्या देशों पर भी लागू होती है ?' इसका उत्तर है –'हाँ; देशों के समक्ष भी कुछ वस्तुपरक प्रकार्य होते हैं, और उनके सामने भी संरोध होते हैं। किसी देश के लिए वस्तुपरक प्रकार्य हो सकते हैं– सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में संवृद्धि का अधिकतमीकरण, घर–घर ग़रीबी का न्यूनतमीकरण, कोई स्थिर कीमत स्तर क़ायम रखना, व्यक्तियों के बीच आय के वितरण में असमानता घटाना, इत्यादि। इन मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए हमें एक भिन्न प्राधार की आवश्यकता पड़ती है, जिसे 'समष्टि अर्थशास्त्र' कहा जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र ही अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें हम समग्र अर्थव्यवस्था के क्रियाकलाप का अध्ययन करते हैं। तदनुसार, इसमें समुचित चरों से क्रिया–व्यापार होता हैं, यथा– राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय उपभोग, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय निवेश, निर्यात, आयात, आदि। जैसा कि हम इस पाठ्यक्रम की परवर्ती इकाइयों में चर्चा करेंगे, इन चरों में से अनेक व्यष्टि–अर्थशास्त्रीय इकाइयों पर समुच्चयन मात्र नहीं होते।

1.2 समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों करें ?

बीसवीं सदी के आरम्भ में, समष्टि अर्थशास्त्र जैसी अर्थशास्त्र की कोई शाखा नहीं थी। क्रुग्मैन एवं वैल्स के अनुसार, 'समष्टि अर्थशास्त्र' वर्ष 1933 में रैग्नर फ्रिश द्वारा गढ़ा गया। समष्टि अर्थशास्त्र में सैद्धान्तिक विकास वर्ष 1936 में जे.एम. केन्स (J M Keynes) कृत पुस्तक 'जनरल थ्योरी ऑफ़ इंटरेस्ट, इम्प्लॉयमेंट एंड मनी' के प्रकाशन के साथ ही सुस्पष्ट हुआ था।

जैसा कि हमने पहले भी कहा, समष्टि अर्थशास्त्र किसी भी अर्थव्यवस्था में सकल स्तरीय क्रियाकलाप के अध्ययन से संबंध रखता है। समष्टि अर्थशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा की आवश्यकता इसलिए हुई कि वह बात जो वैयक्तिक इकाइयों के लिए लागू होती है, समग्र अर्थव्यवस्था के लिए संभवतः लागू न हो। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई फर्म उत्पाद (माना, सीमेंट) के हेतु श्रमिक काम पर लगाती है।

वह वर्तमान वेतन दर पर अपनी आवश्यकतानुसार अनेक श्रमिक काम पर रख सकती है। किसी एकल फर्म द्वारा श्रमिक हेतु माँग में वृद्धि वेतन दर पर कोई प्रभाव नहीं डालती। तथापि, यदि फर्में श्रमिकों हेतु अपनी माँग बढ़ा देती हैं (माना, देश में आर्थिक उत्कर्ष एवं आशावाद के चलते) तो श्रम की 'कमी' और वेतनदर में वृद्धि दृष्टिगत होगी। इसके अलावा, देश में कार्य हेतु उपलब्ध श्रमिकों की संख्या सीमित होती है। अतः इस समय से आगे श्रमिक हेतु माँग वेतनदर ही बढ़ाएगी, न कि श्रम की आपूर्ति।

आइए, एक अन्य उदाहरण पर विचार करें– किसी परिवार द्वारा बचत और उसके देश की कुल बचत। जैसा कि आप सभी मुझसे सहमत होंगे, किसी व्यक्ति द्वारा बचत किया जाना एक सद्गुण है– हमें अपनी सारी आय खर्च नहीं कर देनी चाहिए बल्कि उसका कुछ हिस्सा भविष्य के लिए बचाना चाहिए।

वस्तुतः, यदि कोई व्यक्ति कुछ और अधिक बचाएगा तो उसे अपनी बचत पर ब्याज मिलेगा, और उसकी भावी आय का स्तर बढ़ेगा। वैसे इस विषय का एक अन्य पहलू भी है।

जब कभी कोई व्यक्ति अपनी आय का कुछ अंश बचाता है तो उसका उपभोग व्यय उसी मात्रा में घट जाता है। परिणामतः, वस्तु एवं सेवाओं हेतु उसकी माँग (माना, वस्त्रादि) जिस पर वह राशि खर्च की जाती, घट जाती है।

वह जिस व्यापारी से खरीदारी करता है, उसकी बिक्री में कमी आती है और फलस्वरूप, व्यापारी की आय (लाभ) घट जाती है। व्यापारी की आय में कमी के कारण उसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च भी घट जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब हम उपभोग करते हैं तो हम वस्तु एवं सेवाओं हेतु माँग उत्पन्न करते हैं। वस्तु एवं सेवाओं हेतु यह माँग ही देश में उत्पादन गतिविधियों एवं रोज़गार सृजन की ओर अग्रसर करती है। यदि वस्तु सेवाओं हेतु कोई माँग ही न होगी तो देश को न उत्पादन होगा, न रोज़गार, और न ही आय का सृजन। इस प्रकार, यह देशहित में ही होगा कि घरेलू उपभोग में नियमित वृद्धि हो। उपर्युक्त संदर्भ में, यह प्रायः कहा जाता है कि बचत एक निजी गुण अवश्य है मगर यह एक सामाजिक दोष भी है! इसी को बचत का विरोधाभास कहा जाता है।

बहुधा, व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर वृक्षों एवं वन का दृष्टांत देकर स्पष्ट किया जाता है। वन में नाना प्रकार के वृक्ष होते हैं और उनमें प्रत्येक भिन्न हो सकता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र किसी वन में वृक्षों का अध्ययन करने जैसा ही है, यथा– उनकी प्रजातियाँ, आकार, वृद्धि, आयु आदि। दूसरी ओर, समष्टि अर्थशास्त्र वन का अध्ययन करने जैसा है, यथा– उसका क्षेत्रफल, घनत्व, संघटन, एवं समग्र पारितंत्र। वृक्षों की खातिर हम वन की उपेक्षा नहीं कर सकते – समष्टिक पहलू व्यष्टिक पहलुओं की भाँति ही महत्वपूर्ण होते हैं। जहाँ व्यष्टि अर्थशास्त्र फर्मों एवं परिवारों के क्रियाकलाप का विश्लेषण करने में उपयोगी होता है, समष्टि अर्थशास्त्र नीति निरूपण एवं नीति–मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होता है। आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति, रोज़गार, राष्ट्रीय ऋण, भुगतान शेष, व्यापार चक्र आदि विषय किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ये मुद्दे समष्टि अर्थशास्त्र का भाग होते हैं और इन्हें समष्टिक स्तर पर ही विश्लेषित किए जाने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न।

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

2. स्पष्ट करें कि क्यों समष्टि अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण है।

.....

.....

.....

.....

1.3 कुछ संकल्पनाएँ

यहाँ समष्टि अर्थशास्त्र में बार–बार प्रयुक्त कुछ संकल्पनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

1.3.1 स्टॉक और प्रवाह

किसी भी स्टॉक या भण्डार को किसी समयबिंदु पर मापा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश के पूँजी स्टॉक में मशीनें, उपस्कर एवं भवन शामिल होते हैं। यह राष्ट्रीय धन–सम्पत्ति के उस भाग की ओर इशारा करता है जो पुनरुत्पादनीय (यथा, मानव–निर्मित) होता है; इसमें वे संसाधन आते हैं जो वस्तु एवं सेवाओं के उत्पादन में मदद करते हैं। पूँजी स्टॉक किसी दिनांक विशेष पर मापा जा सकता है। मुद्रा की आपूर्ति, श्रमबल और बाह्य ऋण स्टॉक के कुछ अन्य उदाहरण हैं।

प्रवाह किसी समय अंतराल के संदर्भ में मापे जाते हैं; तदनुसार, यह कोई दर होती है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में, जैसा कि आपने देखा ही होगा, किसी भी फर्म का उत्पादन प्रति दिन अथवा प्रति माह आधार पर मापा जा सकता है। किसी समय आयाम के बिना उत्पादन अस्पष्ट ही रहेगा। इसी प्रकार, यदि मैं कहूँ कि मेरी आय रु. 10,000 है, यह अस्पष्ट ही होगा – यह प्रतिदिन है, प्रति सप्ताह, अथवा प्रति माह? समष्टि अर्थशास्त्र में भी यही तर्क लागू होता है। किसी भी देश का सकल घरेलू उत्पाद (GDP), उदाहरण के लिए, एक प्रवाह है। यह किसी वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तु एवं सेवाओं का मूल्य निरूपित करता है। आय, व्यय, बचत, निवेश, उपभोग, लाभ, ऋण आदि प्रवाहों के ही उदाहरण हैं।

संचय में परिवर्तन के माध्यम से कालान्तर में स्टॉक बढ़ जाता है। पूँजी भंडार में यह परिवर्तन निवेश से दर्शाया जाता है। गणितीय रूप से, स्टॉक को किसी समयावधि के संदर्भ में किसी प्रवाह चर के समाकलन के रूप में देखा जा सकता है।

1.3.2 अल्पावधि एवं दीर्घावधि

आपको व्यष्टि अर्थशास्त्र में अल्पावधि एवं दीर्घावधि संबंधी संकल्पनाओं का ज्ञान होगा – अल्पावधि में उत्पादन के कुछ कारक नियत होते हैं। किसी भी फर्म के लिए पूँजी एवं प्रौद्योगिकी अल्पावधि में नियत माने जाते हैं; उन्हें केवल दीर्घावधि में परिवर्तित किया जा सकता है। तदनुसार, दीर्घावधि में, किसी फर्म के सम्मुख कोई संरोध नहीं होते और सभी उत्पादन कारक परिवर्त्य होने पर वह अपने उत्पादन को अधिकतम कर सकती है।

समष्टि अर्थशास्त्र में, 'अल्पावधि' एवं 'दीर्घावधि' का प्रयोग व्यष्टि अर्थशास्त्र में उनके प्रयोग से कुछ भिन्न है। समष्टि अर्थशास्त्र में, हम कुछ चरों को नियमनिष्ठतः अल्पावधि में ही कुछ अनम्य मानकर चलते हैं, विशेषकर कीमत स्तर एवं वेतन दर। जैसा कि हम आगे की इकाइयों में देखेंगे, परम्परागत अर्थशास्त्रियों ने कीमतों एवं वेतन दरों को इस अर्थ में पूर्णतः सुनम्य माना कि वे तात्कालिक रूप से कुल माँग एवं कुल आपूर्ति में परिवर्तनों के प्रति समंजित हो जाती हैं। केन्स के अनुसार, ये चर अनम्य होते हैं और उन्हें अपने वांछित स्तर के प्रति समंजित होने में वक़्त लगता है। तदनुसार, कीमत एवं वेतन दीर्घावधि में ही अपने संतुलन स्तरों पर पहुँचते हैं, न कि अल्पावधि में। चूँकि नीति–निर्माता अल्पावधि से भी सरोकार रखते हैं, उन्हें नीति–निरूपण में कीमतों एवं वेतनों में अनम्यताओं को ध्यान में रखना ही पड़ता है।

अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के बीच पूँजी निवेश का प्रवाह भी समय लेता है; यह दीर्घावधि में ही संभव हो पाता है, न कि अल्पावधि में। देशों के बीच पूँजी का आदान–प्रदान एक अन्य चर है जो कि दीर्घावधि में ही अपने संतुलन स्तर के प्रति समंजित होता है। इस प्रकार के प्रवाहों का प्रभाव किसी समयावधि में ही विस्तृत होता है।

1.3.3 आर्थिक प्रतिमान

अर्थशास्त्र में हम प्रायः 'प्रतिमान' या 'मॉडल' शब्द का प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ होता है – वास्तविकता की एक सरलीकृत व्याख्या। यह हमें आर्थिक व्यवहार को समझने, उसका विश्लेषण करने एवं उसका पूर्वानुमान करने में सहायक सिद्ध होता है। कोई भी आर्थिक प्रतिमान परिवार अथवा फर्म जैसे किसी व्यष्टि–अर्थशास्त्रीय अभिकारक के लिए हो सकता है। समष्टि अर्थशास्त्र में, यह समग्र अर्थव्यवस्था के क्रियाकलाप को निरूपित करता है।

समष्टि अर्थशास्त्र में, हम प्रासंगिक समष्टि–अर्थशास्त्रीय चरों (जैसे – आय, उत्पादन, व्यय, निवेश, बचत, निर्यात आदि) की पहचान करते हैं और उनके बीच संबंध स्थापित करते हैं। इन चरों के बीच संबंध आरेखों एवं गणितीय समीकरणों के माध्यम से व्यक्त किए जा सकते हैं। समष्टि–अर्थशास्त्रीय प्रतिमान गणितीय व्यंजकों के बिना भी हो सकते हैं, परंतु ये संभवतः परिशुद्ध या सटीक न हों।

कोई भी आर्थिक प्रतिमान कुछ अवधारणाओं पर आधारित होता है। ये अवधारणाएँ इसलिए अभीष्ट होती हैं ताकि सूक्ष्म विवरणों को अनदेखा कर अनिवार्य तत्वों का समावेश किया जा सके। चलिए, इस बात को एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। किसी फर्म के उदाहरण में, हम यह मानकर चलते हैं कि उत्पादन के दो कारक होते हैं, यथा – पूँजी और श्रम। सभी प्रकार के श्रम को हम किसी सजातीय श्रेणी में ही रखते हैं – कार्यक्षेत्र में किसी प्रबंधक और किसी श्रमिक के बीच भेद नहीं करते ! इसी प्रकार, किसी अनधिमान वक्र का वर्णन करते समय हम परिवारों के प्रकार को अनदेखा करते हैं – किसी धनाढ्य परिवार का क्रियाकलाप किसी दरिद्र परिवार के क्रियाकलाप से भिन्न होगा; अथवा किसी ग्रामीण क्षेत्र के परिवार का क्रियाकलाप किसी शहरी क्षेत्र के परिवार के क्रियाकलाप से भिन्न होगा। हम इस प्रकार के ब्यौरों की उपेक्षा इसलिए करते हैं कि हमारा उद्देश्य कीमतों एवं आय में परिवर्तनों के प्रति परिवारों के क्रिया–व्यापार का विश्लेषण करना है। यदि हमारा उद्देश्य परिवारों के बीच उपभोग प्रतिमान में परिवर्तनों की पहचान करना हो तो हमें इस प्रकार की भिन्नताओं पर विचार करने के लिए एक भिन्न प्रतिमान की आवश्यकता होगी।

केंजीय मॉडल में, समष्टि अर्थशास्त्र से कोई भी उदाहरण लेने के लिए, हम कुल उपभोग, कुल निवेश, सरकारी व्यय, एवं निवल निर्यात जैसे समुच्चय सूचक चरों पर विचार करते हैं। हम समग्र अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन का संतुलन स्तर निर्धारित करते हैं। हम परिवारों एवं फर्मों के क्रियाकलाप को अनदेखा करते हैं। अनेक संवृद्धि प्रतिमान (जैसे – हैरड–डॉमर मॉडल अथवा सोलो मॉडल) यह मानकर चलते हैं कि अर्थव्यवस्था में मात्र एक ही क्षेत्र होता है – एक कुल उत्पादन फलन होता है, जो समस्त उत्पादन (यथा, कुल उत्पादन) और समस्त आदानों (यथा, कुल पूँजी एवं कुल श्रम) के बीच संबंध दर्शाता है। यह अवास्तविक लग सकता है परंतु इन संवृद्धि प्रतिमानों का उद्देश्य आर्थिक संवृद्धि, बचत अनुपात एवं जनसंख्या वृद्धि के लिए संतुलन दशाओं का विश्लेषण करना होता है। ये प्रतिमान ब्यौरों की उपेक्षा करते हैं परंतु निकाले गए वृहद निष्कर्ष नीति–निरूपण में सहायक होते हैं। 'क्या संवृद्धि दर विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न होती है ?' जैसे प्रश्नों का हल उक्त संवृद्धि प्रतिमानों के माध्यम से निकाला जा सकता है।

1.3.4 वृद्धि दर

हम अपने दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों में वृद्धि दर का प्रयोग बारंबार करते हैं। मैं उस दर से सरोकार रखता हूँ जिस पर मेरा वेतन एक वर्ष में बढ़ा, वह दर जिस पर मुझे अपनी बचत पर ब्याज मिलता है, और महँगाई की वह दर जो मेरी क्रय–शक्ति को प्रभावित करती है।

एक वृहत्तर स्तर पर, मैं उस दर में रुचि दिखा सकता हूँ जिस पर भारत ही जनसंख्या बढ़ रही है अथवा जीडीपी बढ़ रही है। वृद्धि दर का आकलन सभी मामलों में एक–सा ही होता है। किसी चर की वार्षिक वृद्धि दर निम्नवत् आकलित की जाती है –

$$\text{वृद्धि दर} = \frac{\text{वर्तमान वर्ष में मान} - \text{पिछले वर्ष में मान}}{\text{पिछले वर्ष में मान}} \times 100$$

$$\text{जीडीपी की वृद्धि दर} = \frac{\text{वर्तमान वर्ष की जीडीपी} - \text{पिछले वर्ष की जीडीपी}}{\text{पिछले वर्ष की जीडीपी}} \times 100$$

आइए, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर ज्ञात करें (इस पदबंध को हम अक्सर ही अखबारों में देखते हैं)। (प्रायः जीडीपी की वृद्धि के संदर्भ में हम संवृद्धि शब्द का प्रयोग करते हैं)।

$$\frac{190.10 - 170.95}{170.95} \times 100 = 11.20 \text{ प्रतिशत}$$

हम पाते हैं कि वित्त वर्ष 2018–19 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद *वर्तमान कीमतों* पर रु. 190.10 लाख करोड़ रहा जबकि वर्ष 2017–18 में वर्तमान कीमतों पर यह रु. 170.95 लाख करोड़ रहा था। यदि हम इन मानों को उपर्युक्त समीकरण में रखें तो हमें प्राप्त होता है –

तदनुसार, वर्ष 2018–19 के लिए ऊपर परिकलित जीडीपी संवृद्धि दर होगी – 11.20 प्रतिशत! जैसा कि हम आधिकारिक आँकड़ों एवं समाचार–पत्रों में छपी रिपोर्टों में पाते हैं, वर्ष 2018–19 के दौरान भारत की जीडीपी संवृद्धि दर इतनी ऊँची नहीं रही; यह काफ़ी नीची रही। यहाँ हमने जो त्रुटि की है यह है कि हम जीडीपी का *वर्तमान मूल्य* मान रहे है जिनमें उत्पादन वृद्धि और कीमत वृद्धि शामिल होते हैं। हमारा उद्देश्य, बहरहाल, वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान उत्पादन में वृद्धि का आकलन करना है। हमें कीमत वृद्धि के प्रभाव को निरपेक्ष रखने की आवश्यकता है – इसके लिए हम जीडीपी पर विचार *स्थिर कीमतों* के आधार पर करते हैं। भारत में स्थिर कीमतों पर जीडीपी, वर्ष 2019 के लिए, *आधार वर्ष* 2011–12 पर दर्शाई जाती है। भारत की जीडीपी दर वर्ष 2018–19 के लिए नियत मूल्यों में रु. 140.78 लाख करोड़ रही जो कि वर्ष 2017–18 में रु. 131.80 लाख करोड़ रही थी (लिया गया आधार वर्ष 2011–12 है; तदनुसार, ये मान वर्ष 2011–12 की कीमतों में हैं।) यदि हम इन मानों को उपर्युक्त समीकरण में रखें तो ज्ञात होता है कि वर्ष 2018–19 में वास्तविक, जीडीपी संवृद्धि दर निम्नवत् रही

$$\frac{140.78 - 131.80}{131.80} \times 100 = 6.81 \text{ प्रतिशत}$$

1.4 उत्पादन संभाव्यता वक्र

जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया, उच्चतर आर्थिक संवृद्धि हासिल करना अधिकांश देशों की आर्थिक नीति के उद्देश्यों में एक होता है। किन्तु किसी देश की आर्थिक संवृद्धि एक सीमा से अधिक नहीं हो सकती।

यह सीमा भूमि, श्रम, पूँजी, कच्चा माल, ऊर्जा एवं तकनीकी जानकारी जैसे आदानों की उपलब्धता से ही सीमित होती है। यहाँ तक कि ऐसे देशों में, जहाँ प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता से उपलब्ध हों, उनके दोहन हेतु वांछित वित्त संसाधन शायद कम हों। हर वर्ष हम

सरकारी बजट पेश किए जाने के दौरान टीवी से चिपके बैठे रहते हैं; क्योंकि यह हमें सरकार की नीति एवं मुख्य क्षेत्रों के विषय में जानकारी देता है।

बजट ही दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर कितनी–कितनी धन राशियां व्यय की जानी हैं। ऐसा इसलिए ज़रूरी है कि व्यय की विभिन्न मदों को आवंटित हो सकने वाले संसाधन सीमित होते हैं । आमतौर पर, हमने देखा है कि किसी भी देश के सामने अनेक संरोध होते हैं – विभिन्न क्रियाकलाप करने के लिए शायद पर्याप्त बजट न हो, हो सकता है कि कुछ सामरिक कच्चे माल की आपूर्ति में कमी हो, यह भी हो सकता है कि किसी परियोजना के श्रीगणेश एवं उसकी इतिश्री के बीच एक लम्बी विकसन अवधि हो, इत्यादि।

समष्टि अर्थशास्त्र में, हम एक उत्पादन संभाव्यता वक्र (Production Possibility Curve - PPC) के माध्यम से किसी देश के समक्ष संरोधों को प्रस्तुत करते हैं। सरलता की दृष्टि से, चलिए, मान लेते हैं कि उक्त देश मात्र दो ही जिन्सों (माना, एक पूँजीगत वस्तु और एक उपभोज्य वस्तु) का उत्पादन करता है। यहाँ उक्त वक्र (PPC) मूल बिंदु पर अवतल है (देखें चित्र 1.1) जो यह दर्शाता है कि एक जिन्स का अधिक उत्पादन तभी किया जा सकता है जबकि दूसरी जिन्स का उत्पादन घटा दिया जाए। इस वक्र (PPC) की सीमा जीडीपी का संभावित स्तर दर्शाती है, बशर्ते उपलब्ध संसाधनों की मात्रा ज्ञात हो। प्रस्तुत की जा सकने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं के संयोजन भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

चित्र 1.1 में दर्शाए गए उत्पादन संभाव्यता वक्र पर हमने दो बिंदु (E और F) इंगित किए हैं। बिंदु E उपभोज्य वस्तु की अधिकता और पूँजीगत वस्तु की अल्पता दर्शाता है जबकि बिंदु F पूँजीगत वस्तु की अधिकता और उपभोज्य वस्तु की अल्पता दर्शाता है। हम देखते हैं कि इन दोनों वस्तुओं के बीच एक संतुलन प्रयास है। कोई देश उत्पादनार्थ वस्तुओं का कौन–सा संयोजन चुनता है यह उस देश के उद्देश्यों एवं जरूरतों पर निर्भर करता है।

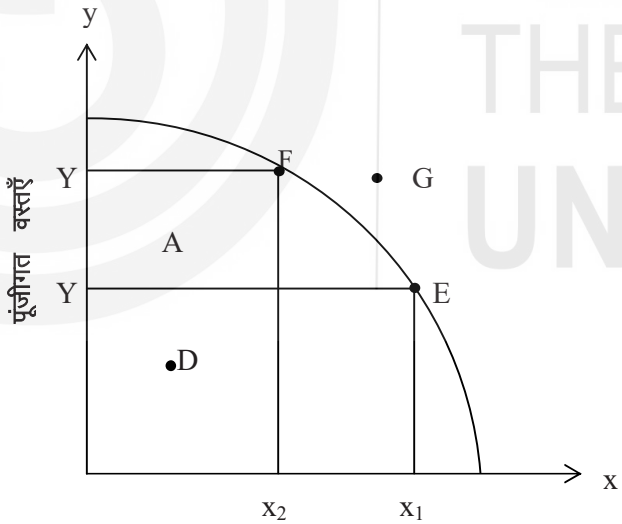

चित्र. 1.1: उत्पादकता संभांवना वक्र

ध्यान देने की बात है कि उक्त वक्र (PPC) किसी देश के संभावित सकल घरेलू उत्पाद को दर्शाता है। उस देश में वास्तव में जो उत्पादन किया जा रहा है, भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब उत्पादन उक्त वक्र (PPC)पर होता है (देखें चित्र 1.1 में बिंदु E व F) तो सभी संसाधनों का दक्षता पूर्वक उपयोग किया जाता है। यदि उत्पादन इस वक्र (PPC) के अंदर की ओर किसी बिंदु पर होता है (देखें बिंदु A व D) तो कुछ संसाधन

अल्प–प्रयुक्त ही रहते हैं। इस वक्र के बाहर कोई भी बिंदु, जैसे चित्र 1.1 में G, लभ्य नहीं होता। यदि देश इस वक्र के अंदर किसी बिंदु पर कार्यरत हो तो एक 'उत्पादन अंतराल' निम्नवत् दृष्टिगत होता है–

उत्पादन अंतराल (output gap) = (संभावित उत्पादन – वास्तविक उत्पादन)

कालांतर में संभावित जीडीपी दो विधियों से बढ़ सकती है – प्रौद्योगिकी प्रगति और अपेक्षाकृत अधिक संसाधनों का संचय। ऐसे मामलों में, उक्त वक्र (PPC)दाएँ खिसक जाता है। इसके यथेष्ट रूप से बाहर की ओर खिसक जाने की स्थिति में, बिंदु G (जो कि पहले लभ्य नहीं था) अब प्राप्त किया जा सकता है। जब किसी देश का यह वक्र (PPC) बाहर की ओर खिसकता है तो देश में आर्थिक संवृद्धि दिखाई पड़ती है।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित संकल्पनाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें –
   (i) स्टॉक और प्रवाह (ii) अल्पावधि और दीर्घावधि

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. एक आरेख के माध्यम से उत्पादन संभाव्यता वक्र की संकल्पना समझाइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

1.5 आर्थिक संवृद्धि का महत्व

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया, किसी भी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर उसके वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर से दर्शाई जाती है। आपने भी देखा होगा कि विभिन्न देशों की संवृद्धि दरें भिन्न–भिन्न होती हैं – जहाँ चीन जैसे देशों में दशकों तक 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की संवृद्धि दर देखी गई है, वहीं अनेक अफ्रीकी देश ऐसे भी हैं जहाँ वृद्धि दर नगण्य रही है। विश्वयुद्ध पश्चात् अवधि में हुई जापान की अत्युच्य आर्थिक संवृद्धि किसी चमत्कार से कम न थी। पिछले 20 वर्षों में, बहरहाल, जापान में गंभीर आर्थिक संकट ही रहा है – अत्यधिक घट–बढ़ के साथ आर्थिक संवृद्धि, ह्रासमान जनसंख्या विस्तार, और भारी राजकीय ऋण। बीसवीं सदी के आरंभ में अर्जेन्टीना, (एक लैटिन अमेरिकी देश) ऑस्ट्रेलिया, कनाडा एवं फ्रांस जैसे अनेक देशों की अपेक्षा कहीं अधिक सम्पन्न था।

अर्जेन्टीना विस्तृत प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है, ख़ासकर कृषि एवं ऊर्जा के क्षेत्रों में। वर्ष 1913 में अर्जेन्टीना की प्रति व्यक्ति आय $3797 थी जबकि यह आय $3462 फ्रांस में और जर्मनी में $3134 थी। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार, वर्ष 2019 में, अर्जेन्टीना की प्रतिव्यक्ति आय 9887 रही जबकि फ्रांस व जर्मनी की क्रमशः $41,760 व $46,563 रही। यह दर्शाता है कि पिछली शताब्दी में अर्जेन्टीना के मुक़ाबले फ्रांस व जर्मनी की प्रति व्यक्ति आय काफ़ी तेज़ी से बढ़ी।

अर्थशास्त्री अर्जेन्टीना की संवृद्धि दर में इस आपेक्षिक गतिहीनता का कारण अनेक कारकों को मानते हैं, जिनमें शामिल हैं – राजनीतिक अस्थिरता, प्रौद्योगिकीय प्रगति का अभाव, आयात–प्रतिस्थापन (निर्यात–प्रोत्साहन की बजाय) की विकास रणनीति ही अपनाए रखना, और उच्च मुद्रास्फीति। एक अन्य उदाहरण में, हम विश्व की दो प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं – चीन और भारत की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करेंगे। वर्ष 1990 तक भारत और चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी लगभग एक समान स्तर पर ही थी (अमेरिकी डॉलर के पदों में, वर्ष 1990 में भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी $367 रही जबकि चीन की $318 रही। परवर्ती अवधि में, बहरहाल, चीन की संवृद्धि दर भारत की संवृद्धि दर से काफ़ी अधिक रही। वर्ष 2018 में, भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी की लगभग 20 प्रतिशत रही (अमेरिकी डॉलर के पदों में, वर्ष 2018 में, प्रति व्यक्ति जीडीपी चीन की $9770 के मुक़ाबले भारत की $2010 रही)। यदि हम वर्ष 2018 के लिए क्रय–शक्ति सममूल्यता (PPP) के पदों में भारत और चीन की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करें तो भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी ($7762) चीन को ($18,236) मुकाबले लगभग 43 प्रतिशत रही। हम समष्टि–अर्थशास्त्रीय विश्लेषण के द्वारा इस प्रकार की तुलना विभिन्न देशों के बीच कर संवृद्धि में ऐसी भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण कर सकते हैं।

आप को '70 का नियम' तो ज्ञात ही होगा। यह उन वर्षों की संख्या दर्शाता है जो आपकी धनराशी को दुगना करने में लेता है। यदि आप किसी बैंक में रु. 1000 बचाते हैं और ब्याज दर 1 प्रतिशत प्रतिवर्ष है तो आपकी बचत को दुगना होने, अर्थात् रु. 2000 होने, में 70 वर्ष लगेंगे। यदि ब्याज दर 7 प्रतिशत हो तो इसे दुगना होने में मात्र 10 वर्ष लगेंगे। इसका सूत्र है –

$$\text{धनराशि दुगना होने हेतु वर्षों की संख्या} = \frac{70}{\text{ब्याज दर}}$$

यही नियम किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति जीडीपी पर लागू होता है। किसी देश की प्रति व्यक्ति जीडीपी 5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही हो तो उसको अपनी प्रति व्यक्ति जीडीपी को दुगना करने में 14 वर्ष लगेंगे (यथा, $\frac{70}{5} = 14$)। तदनुसार, यदि यही वृद्धि 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से हो तो वह 7 वर्षों में दुगनी हो जाएगी। चलिए, ऐसे दो देशों, A और B के बीच तुलना करते हैं जिनकी प्रति व्यक्ति जीडीपी, माना रु. 1000, एक समान है। मान लेते हैं कि देश A की प्रति व्यक्ति जीडीपी 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है जबकि देश की यही दर 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। यदि हम 28 वर्ष की कोई अवधि लेकर चलें तो इस अवधि पश्चात् देश A की प्रति व्यक्ति जीडीपी रु. 4000 होगी। इन्हीं 28 वर्षों में देश B की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP) रु. 8000 हो जाएगी ! अब आप कल्पना कर सकते हैं कि दीर्घावधि में कोई उच्चतर वृद्धि दर प्रति व्यक्ति GDP में कितना अंतर ला सकती है।

आर्थिक संवृद्धि इसलिए महत्वपूर्ण होती है कि यह लोगों की आय को वृद्धि की ओर अग्रसर करती है, जो कि बदले में उच्चतर उपभोग एवं बचत की ओर ले जाती है। दूसरे, उच्चतर आय एवं निवेश की वजह से सरकार के कर राजस्व में वृद्धि होती है। तीसरे, जीडीपी में वृद्धि बेरोज़गारी में कमी की ओर अग्रसर करती है क्योंकि अपेक्षाकृत अधिक श्रमिकों को रोज़गार मिलता है। चौथे, बढ़ा सरकारी ख़र्च उन्नत राजकीय सेवाओं की ओर प्रवृत्त करता है।

ध्यान देने की बात है कि आर्थिक विकास आर्थिक संवृद्धि से भिन्न होता है। जहाँ आर्थिक संवृद्धि जीडीपी में वृद्धि दर्शाती है, वहीं आर्थिक विकास एक काफ़ी वृहद संकल्पना है। आर्थिक विकास में स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पेयजल, ग़रीबी की अविद्यमानता, बुनियादी सुविधाओं में सुधार आदि शामिल होते हैं। इस प्रकार का सुधार तभी संभव होगा जब आर्थिक संवृद्धि होगी।

1.6 मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी

समाचार–पत्रों में और अपने दैनिक वार्तालाप में हम प्रायः 'मुद्रास्फीति' और 'बेरोज़गारी' शब्दों से दो–चार होते हैं। इन दो चरों में से किसी एक में भी वृद्धि आम जीवन में कंगाली और नीति–निर्माताओं के लिए बड़ी चिंता का विषय बनती है। मुद्रास्फीति को इन शब्दों में परिभाषित किया जाता है – 'कीमतों के सामान्य स्तर में निरंतर वृद्धि' अर्थात् महँगाई बढ़ना। यदि आज कीमत–स्तर बढ़ जाता है परंतु कल गिर जाता है तो इसको महँगाई बढ़ना नहीं कहा जाएगा, बल्कि इसे कीमतों में अल्पावधि उच्चावचन ही कहा जाएगा। पदबंध 'सामान्य कीमत स्तर' भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि कालांतर में, कुछ जिन्सों के दाम बढ़ सकते हैं जबकि कुछ अन्य के वस्तुतः गिर सकते हैं। परिणामतः, कुल मिलाकर, कीमतों का औसत स्तर रह सकता है अथवा नीचे भी जा सकता है। इसी प्रकार, यदि किसी ऐसी जिन्सों के समूह की कीमत जिनमें अर्थव्यवस्था के उत्पादन के कुल मूल्य का एक छोटा–सा अंश मात्र ही शामिल हो, बढ़ जाता है तो पुनः इसे मुद्रास्फीति नहीं माना जाएगा। दूसरे शब्दों में, पूरा अर्थ यह है कि ऐसी जिन्सों की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव सभी जिन्सों को औसत कीमत स्तर को प्रभावित कर पाने के लिए बहुत ही कम है। तदनुसार, हम पाते हैं कि मुद्रास्फीति एक वृहद–स्तरीय घटना है और किसी जिन्स विशेष अथवा, किसी लघु जिन्स–समूह की कीमत में वृद्धि से सम्बद्ध नहीं है। जब महँगाई फैलती है तो लोगों की क्रय–शक्ति घट जाती है। मुद्रास्फीति समाज के विभिन्न वर्गों पर पृथक–पृथक प्रभाव डालती है। महँगाई के दौर में, जहाँ वेतनभोगी समूहों (तयशुदा मासिक आय पाने वाले लोगों) पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उत्पादनकर्ता एवं व्यापारी वर्ग लाभ कमा रहा होता है। अत्युच्य मुद्रास्फीति (जिसे प्रायः हाइपर–इन्फ़्लेशन कहा जाता है) हर व्यक्ति का बजट बिगाड़ देती है।

बेरोज़गारी एक अन्य सामाजिक बुराई है। समष्टि अर्थशास्त्र में, जब हम 'बेरोजगारी' शब्द का उल्लेख करते हैं तो हमारा अभिप्रायः अनैच्छिक बेकारी से होता है अर्थात् व्यक्ति काम ढूँढ़ रहा है मगर उसे काम नहीं मिलता। वह व्यक्ति जो कोई काम नहीं ढूँढ़ रहा, उसे बेरोज़गार नहीं कहा जा सकता। ऐसे भी दौर होते हैं जब हम एक नौकरी छोड़कर दूसरी तलाशते हैं। किसी भी समय–बिंदु पर, ऐसी कालावधियाँ होती हैं जब बेरोज़गारी दर बहुत ऊँची होती है। बेरोज़गारी दो आधारों पर बुरी होती है, यथा – (i) इसके परिणामस्वरूप बेरोज़गारों के लिए आय हानि ही सामने आती है, और (ii) अमूल्य मानव संसाधनों की बर्बादी होती है।

आमतौर पर देखा गया है कि मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के बीच एक संतुलन–प्रयास होता है, कम से कम किसी अल्पावधि के लिए ही।

यदि सरकार बेराज़गारी की दर घटाना चाहती है तो अर्थव्यवस्था को मुद्रास्फीति की उच्चतर दर का ही सामना करना ही होता है।

इसी प्रकार, यदि सरकार महँगाई पर क़ाबू पाना चाहती है तो बेरोज़गारी की दर बढ़ सकती है। मुद्रास्फीति और बेराज़गारी के बीच संबंध पर व्यापक बहस होती रही है; और इन दोनों पर अर्थशास्त्रियों के बीच काफ़ी मतभेद भी देखने में आता है।

1.7 व्यापार–चक्र

किसी भी देश में आर्थिक क्रियाकलापों में उतार–चढ़ाव आते ही रहते हैं – जहाँ कुछ अवधियों में संवृद्धि दर ऊँची होती है, वहीं कुछ अन्य अवधियों में यह गिर जाती है। यह आमतौर पर देखा जाता है कि ऊँची और नीची संवृद्धि दरों के बारी–बारी से अनेक दौर होते हैं। संवृद्धि के ऐसे ही दौर 'व्यापार चक्र' कहलाते हैं।

किसी भी व्यापार चक्र के चार चरण होते हैं, यथा – विस्तार, मंदी, अवसाद एवं समुत्थान। साथ ही, किसी भी व्यापार चक्र की अवधि दो वर्ष से लेकर बारह वर्ष की हो सकती है। व्यापार चक्रों समकालिकता होती है। अर्थव्यवस्था के अधिकांश उद्योगों अथवा क्षेत्रों में अवसाद अथवा संकुचन सहकालिक रुप से होता है। मंदी एक उद्योग से दूसरे उद्योग में चली जाती है और यह सिलसिला समग्र अर्थव्यवस्था के मंदी के चंगुल में आ जाने तक चलता ही रहता है। इसी प्रकार, समृद्धि उद्योगों अथवा क्षेत्रों के बीच निवेश–उत्पादन संबंधों वाले विभिन्न अनुबंधनों के माध्यम से सर्वत्र फैलती है। व्यापार चक्रों को अन्य उतार–चढ़ावों से भिन्न पहचाना जा सकता है क्योंकि ये बहुधा *वृहत्तर, दीर्घतर* और *व्यापक रुप से विसरित* होते हैं।

व्यापार चक्रों में हम पाते हैं कि अनेक अन्तरावद्ध चर एक साथ चलते हैं। उतार–चढ़ाव उत्पादन स्तर के साथ–साथ रोज़गार, निवेश, उपभोग, ब्याज दर, कीमत स्तर आदि में भी सहकालिकता दिखाई पड़ती है। मंदी अथवा विस्तार का तत्काल प्रभाव वस्तुओं की माल–सूचियों पर पड़ता है। जब मंदी आती है तो इन विस्तृत सूचियों में संचय वांछित स्तर से कहीं ऊपर नज़र आने लगता है। प्रत्युत्तर में, उत्पादनकर्ता वर्ग वस्तुओं के उत्पादन स्तर को घटा देता है। इसके विपरीत, जब समुत्थान शुरु होता है तो कुल माँग बढ़ती है और माल–सूचियाँ वांछित स्तर से नीचे चली जाती हैं। इससे व्यापार–गृह माल के लिए पहले से अधिक ऑर्डर करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं; परिणामतः उत्पादन बढ़ता है और निवेश प्रोत्साहित होता है। व्यापार चक्र अपनी प्रकृति में अंतर्राष्ट्रीय होता हैं।

इसका अर्थ है कि एक देश में यह आरंभ होने के बाद अपने संक्रमण प्रभाव के कारण अन्य देशों में भी फैल जाता है। उदाहरणार्थ, किसी एक देश के वित्त बाज़ारों में व्याप्त गिरावट तेज़ी–से फैलकर अन्य देशों में भी दिखाई पड़ने लगती है क्योंकि वित्त बाज़ार पूँजी प्रवाहों के माध्यम से विश्व व्यापी रूप से जुड़े होते हैं।

इसके अलावा, किसी एक देश, माना अमेरिका, में छाई मंदी अन्य देशों में भी फैल सकती है क्योंकि अमेरिका द्वारा किया जाने वाला आयात घट जाएगा। अमेरिका को निर्यात करने वाले प्रमुख देशों के निर्यात में कमी आएगी और वहाँ मंदी दिखाई देगी। मंदी (1929–34) का प्रतिकूल प्रभाव इतिहास में बखूबी दर्ज़ है। इसके परिणामस्वरूप अनेक देशों में समाज के एक बड़े तबके में व्यापक बेरोज़गारी, ग़रीबी, और कंगाली दिखाई दी थी।

हाल के वर्षों में, वर्ष 2007–09 के दौरान (इसे प्रायः महामंदी की संज्ञा दी जाती है) अधिकांश देशों में गंभीर मंदी का दौर दिखाई दिया।

आज विश्व वर्ष 2007–09 के आर्थिक संकट के प्रतिकूल प्रभाव से काफ़ी हद तक उबर चुका है, परंतु इसकी स्मृति अभी ताज़ा ही है।

बोध प्रश्न 3

1. किसी देश के लिए आर्थिक संवृद्धि क्यों आवश्यक है ? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2. आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3. व्यापार चक्र की संकल्पना पर प्रकाश डालें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.8 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर स्पष्ट किया। समष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था के वृहत्तर एवं समूहपरक पहलुओं पर विचार करता है। यह नीति–निरूपण एवं नीति–मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होता है।

हमने चर्चा की कि वृद्धि दर किस प्रकार आकलित की जाए। इसके अलावा, हमने आर्थिक संवृद्धि के महत्व को भी बताया। स्टॉक एवं प्रवाह तथा अल्पावधि एवं दीर्घावधि जैसी संकल्पनाओं के बीच अंतर स्पष्ट करना भी इस इकाई का विषय रहा। साथ ही,

मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी एवं व्यापार चक्र जैसी कुछ संकल्पनाओं पर भी संक्षिप्त चर्चा की गई, जो कि हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में अक्सर सामने आती हैं।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1. खण्ड 1.2 पढ़ें और उत्तर दें।
2. खण्ड 1.2 पढ़ें और उत्तर दें।

बोध प्रश्न 2

1. (i) स्टॉक को किसी समय–बिंदु पर मापा जाता है जबकि प्रवाहों को समय की प्रति इकाई मापा जाता है।

   (ii) अल्पावधि में कुछ कारक नियत होते हैं जबकि दीर्घावधि में सभी कारक परिवर्तनशील होते हैं। विस्तृत वर्णन के लिए खण्ड 1.2 पढ़ें।
2. उत्पादन सम्भावता वक्र किसी अर्थव्यवस्था का संभावित उत्पादन दर्शाता है। अपने उत्तर के लिए चित्र 1.1 की व्याख्या करें।

बोध प्रश्न 3

1. खण्ड 1.5 पढ़ें और उत्तर दें।
2. आर्थिक संवृद्धि का अर्थ होता है – किसी देश की जीडीपी में वृद्धि। आर्थिक विकास एक बहुआयामी संकल्पना है। प्रति व्यक्ति आय के अतिरिक्त, इसमें विभिन्न सामाजिक–आर्थिक चर भी शामिल होते हैं। विस्तृत वर्णन के लिए खण्ड 1.5 पढ़ें।
3. खण्ड 1.7 पढ़ें और उत्तर दें।

इकाई 2 राष्ट्रीय आय लेखांकन*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 आय का चक्रीय (वर्तुल) प्रवाह

- 2.2.1 प्रवाहों के प्रकार
- 2.2.2 द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.3 वित्तीय बाजार सहित आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.4 भराव और रिसाव
- 2.2.5 त्रि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह
- 2.2.6 चार–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह

2.3 राष्ट्रीय आय तथा सम्बन्धित अवधारणाएँ

2.4 सम्बन्धित समुच्चयों का माप

- 2.4.1 निजी आय
- 2.4.2 व्यक्तिक (व्यक्तिगत) आय
- 2.4.3 प्रयोज्य आय

2.5 सार संक्षेप

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे:

- एक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य सम्बन्ध का आकलन करना;
- एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय को कैसे मापा जाता है; का वर्णन करना; और
- समष्टिगत समुच्चयों (समग्रों) के विभिन्न घटकों को सुनिश्चित करना।

2.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय आय लेखांकन (लेखा पद्धति) (National Income Accounting, NIA) एक व्यावसायिक लेखा पद्धति है जिसे एक राष्ट्र एक विशिष्ट समयावधि में अपनी आर्थिक क्रिया के स्तर को मापने में प्रयोग करता है। यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सेदारों अर्थात् एक अर्थव्यवस्था के परिवारों, फर्मों, सरकार तथा बाह्य क्षेत्रों के व्यय तथा आय के समंक (आँकड़ों) को अंकित करता है। हालाँकि यह सटीक तरीके से आर्थिक क्रिया को माप नहीं सकता, यह एक अर्थव्यवस्था के कार्य तथा आय एवं व्यय की संतति (जनन) के माध्यमों/प्रणालियों पर उपयोगी अन्तर्दृष्टि (गहरी पहुँच) उपलब्ध कराता है। हम राष्ट्रीय आय लेखांकन से प्राप्त सभी सूचनाओं से एक अर्थव्यवस्था के निर्धारित समय के लिए प्रति

* डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय।

व्यक्ति आय तथा वृद्धि (संवृद्धि) को प्राप्त कर सकते हैं। एक अर्थव्यवस्था के निष्पादन को संकेतकों जैसे कि सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product, GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP) तथा सकल राष्ट्रीय आय (Gross National Income, GNI) जिनकी चर्चा हम इस इकाई में करेंगे के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। हम एक अर्थव्यवस्था के अन्य सम्बन्धित समुच्चयों की भी चर्चा करेंगे।

2.2 आय का प्रवाह

आय का प्रवाह प्रमुख क्षेत्रों जैसे परिवारों (घरेलू) क्षेत्र, फर्मों (अथवा व्यावसायिक) क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा बाह्य क्षेत्र (शेष विश्व भी कहा जाता है) के मध्य वस्तुओं एवं सेवाओं के सतत् चक्रीय संचलन को प्रदर्शित करता है। यह प्रकृति में चक्रीय (वर्तुल) है क्योंकि यह प्रारंभिक बिन्दु पर वापस आते हुए एक चक्र में चलता है। जब भी राष्ट्रीय उत्पादन उत्पादित किया जाता है, तो यह राष्ट्रीय आय के रूप में उस उत्पादन पर माँगों (दावों) की समान मात्रा उत्पन्न करता है। आय का प्रवाह एक अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण क्षेत्र के मुद्रा आय के प्रवाह अथवा वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह को प्रदर्शित करता है।

2.2.1 चक्रीय प्रवाहों के प्रकार

चक्रीय प्रवाहों के दो प्रकार हैं: (i) वास्तविक चक्रीय प्रवाह अथवा उत्पाद प्रवाह (Real Flow or Product Flow), और (ii) आय चक्रीय प्रवाह अथवा मुद्रा प्रवाह (Income flow or Money flow) ।

1. **वास्तविक चक्रीय प्रवाह अथवा उत्पाद प्रवाह**

   वास्तविक चक्रीय प्रवाह वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाहों को दर्शाता है। इनको वास्तविक चक्रीय प्रवाह कहा जाता है क्योंकि ये वास्तविक वस्तुओं एवं सेवाओं से बने होते हैं। इसे उत्पाद प्रवाह भी कहा जाता है।

2. **आय चक्रीय प्रवाह अथवा मुद्रा चक्रीय प्रवाह**

   आय चक्रीय प्रवाह साधनों के भुगतानों तथा उपभोग व्यय के रूप में मुद्रा के प्रवाहों को प्रदर्शित करता है। मुद्रा चक्रीय प्रवाह घटित होता है क्योंकि यह मुद्रा के माध्यम से जो विभिन्न लेन–देनों को संचालित करता है, एवं जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मुद्रा चक्रीय प्रवाहों को लाता है। साधन सेवाओं का चक्रीय प्रवाह साधन भुगतानों के रूप में "मुद्रा चक्रीय प्रवाह" को उत्पन्न करता है, जो आय चक्रीय प्रवाह का रूप धारण करता है। वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च "व्यय चक्रीय प्रवाह" का रूप लेता है। आय तथा व्यय दोनों प्रवाहों को विपरीत दिशा में एक चक्रीय तरीके में व्यक्त किया गया है। इस ढाँचे में, अर्थव्यवस्था को चार क्षेत्रों, यथा i) घरेलू क्षेत्र, ii) व्यावसायिक क्षेत्र, iii) सरकारी क्षेत्र तथा iv) बाह्य क्षेत्र में विभाजित किया गया है।

2.2.2 द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का प्रवाह

आरंभ में, हम मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था केवल दो क्षेत्रों, यथा, i) घरेलू, तथा ii) फर्मों से मिलकर बनी होती है। इस सरलतम अर्थव्यवस्था में, न तो सरकार का हस्तक्षेप है, न ही बाह्य व्यापार है। घरेलू क्षेत्र (परिवार) अपनी संपूर्ण आय को खर्च करते हैं, अर्थात्, घरेलू क्षेत्र के द्वारा कोई भी बचत नहीं की जाती है। चित्र 2.1 एक द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में व्यय तथा आय के प्रवाहों को प्रदर्शित करता है। चित्र के ऊपर का आधा भाग साधन बाजार को दिखाता है तथा नीचे का आधा भाग वस्तु/उत्पाद बाजार को प्रस्तुत करता है।

बाह्य दो तीर (घड़ी की सुई की दिशा में) वास्तविक प्रवाहों को इंगित करते हैं तथा आन्तरिक दो तीर (दाएँ से बाएँ) मौद्रिक प्रवाहों को दर्शाते हैं।

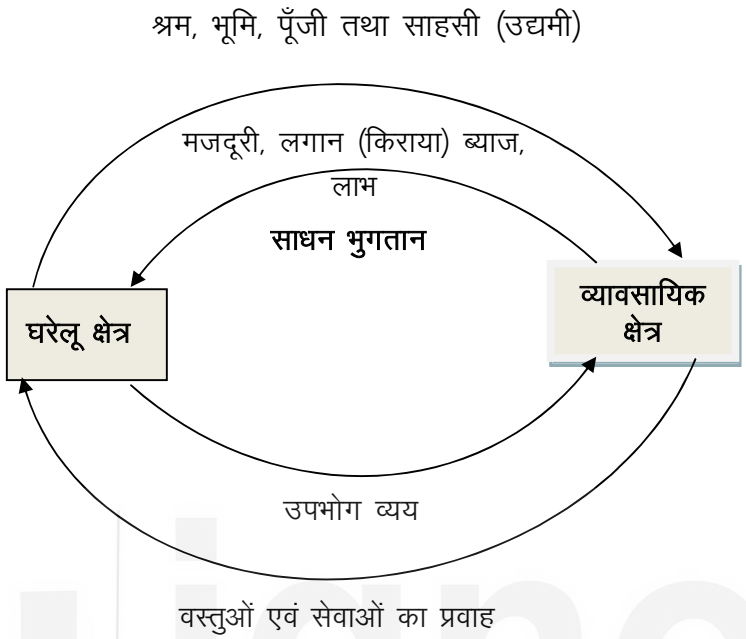

चित्र 2.1 एक द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का चक्रीय प्रवाह

हम देख सकते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र एक खरीददार तथा एक विक्रेता की भाँति है। व्यावसायिक फर्में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु घरेलू क्षेत्र (परिवारों) से साधन सेवाओं को किराए पर लेते हैं, जो उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं (अर्थात्, भूमि, श्रम, पूँजी तथा साहसी (उद्यमी)। व्यावसायिक फर्में उत्पादन के साधनों को उत्पादकीय सेवाओं के बदले मुद्रा के रूप में पारिश्रमिक (अथवा, क्षतिपूर्ति) देते हैं। उत्पादन के साधनों को क्षतिपूर्ति अथवा उनकी आय, अर्थात् भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमी के लिए क्रमशः लगान (किराया), मजदूरी, ब्याज तथा लाभ उत्पादन प्रक्रिया में उत्पन्न की जाती है। इस प्रकार मुद्रा आय फर्म क्षेत्र से घरेलू क्षेत्र (परिवारों) की तरफ प्रवाहित होती है। इस मुद्रा से, घरेलू क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए फर्मों से वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदते हैं। इस प्रकार वहीं मुद्रा घरेलू क्षेत्र से फर्म क्षेत्र की ओर वापस प्रवाहित होती है (याद रखें, मान्यता यह है कि परिवारों के द्वारा कोई बचत नहीं की जाती है – वे अपनी संपूर्ण आय को खर्च कर देते हैं)। इस प्रकार अर्थव्यवस्था की संपूर्ण आय "बिक्री आगम" के रूप में फमों को वापस आती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "एक क्षेत्र का खर्च दूसरे क्षेत्र की आय होती है।"

2.2.3 वित्तीय बाजार सहित आय का चक्रीय प्रवाह

द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में, हम जानते हैं कि घरेलू क्षेत्र (परिवारों) के द्वारा प्राप्त कुल आय को वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च कर दिया जाता है। लेकिन वास्तविक जीवन में, परिवार अपनी आय का एक भाग बचत करते हैं तथा उस पर ब्याज प्राप्त करते हैं। फर्में निवेश के उद्देश्य के लिए परिवारों से ऋण लेती हैं। वित्तीय संस्थान बचतकर्त्ता तथा निवेशकर्त्ता के मध्य (यहाँ परिवार तथा फर्में) मध्यस्थता करते हैं। वित्तीय बाजार परिवारों की बचत को एकत्रित करते हैं तथा इसे व्यावसायिक क्षेत्र के निवेश के रूप में आगे दे देते हैं (चित्र 2.2 देखिए)। बचतें मुद्रा के प्रवाह से रिसावों (leakages) का निर्माण करती हैं तथा निवेश प्रवाह में भराव (injection) बन जाता है।

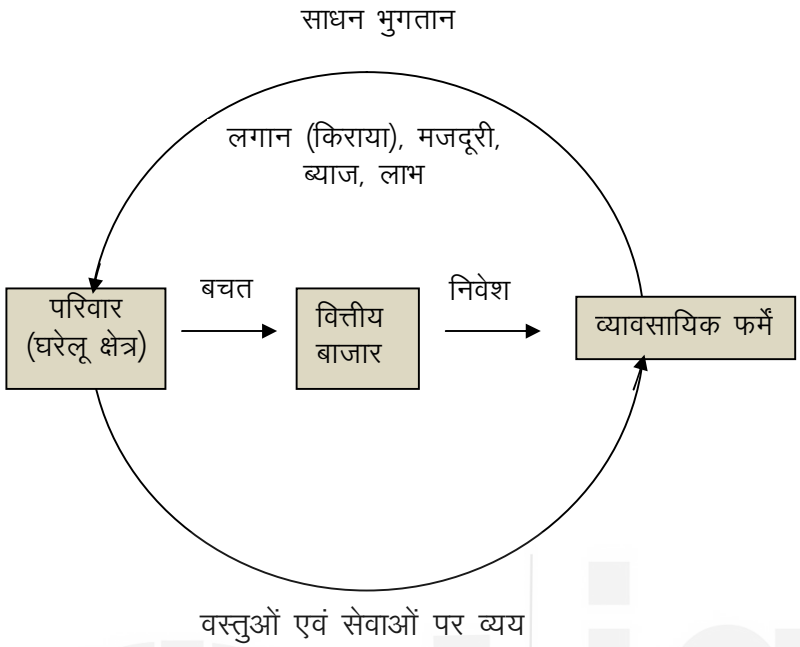

चित्र 2.2: पूँजी बाजार सहित द्वि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

2.2.4 भराव और रिसाव

रिसाव, आय के प्रवाह से निकासी (आहरण) मात्रा होती है। यह परिवारों, कर भुगतानों, अथवा आयातों पर व्यय के द्वारा बचत के रूप में हो सकती है। दूसरी तरफ, भराव आय के चक्रीय प्रवाह में जोड़ी गई मात्रा (निवेश रूप में डाली गई मात्रा) है। चक्रीय प्रवाह हेतु भराव निवेश, सरकारी व्यय, आर्थिक सहायता (प्रतिदान), अथवा निर्यात के रूप में हो सकते हैं। रिसावों को निकासी कहा जाता है जबकि भरावों को "वृद्धि" कहा जाता है।

2.2.5 त्रि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का प्रवाह

जब सरकारी क्षेत्र (अर्थात्, अर्थव्यवस्था का तीसरा क्षेत्र) को द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में जोड़ा जाता है, तो हम त्रि–क्षेत्रीय प्रतिरूप प्राप्त करते हैं। इस प्रतिरूप में, राजकोषीय संचालन (कर, सरकारी व्यय तथा हस्तांतरण भुगतानों) को जोड़ा जाता है। इन चरों का आय तथा व्यय प्रवाहों पर अलग–अलग प्रभाव होता है। कर, चक्रीय प्रवाह से रिसाव होते हैं क्योंकि ये "व्यक्तिगत प्रयोज्य आय" को कम करते हैं तथा इसलिए उपभोग तथा बचतों को भी। सरकार आर्थिक विकास के लिए पूँजी वस्तुओं, आधारभूत संरचना (उदाहरण के लिए, राजमार्गों, विद्युत, इत्यादि) रेलमार्गों, सुरक्षा, शिक्षा, लोक स्वास्थ्य, इत्यादि पर खर्च करती है। इसलिए सरकारी खर्च प्रवाह में भराव होते हैं क्योंकि यह घरेलू क्षेत्र से साधन सेवाओं को तथा व्यावसायिक क्षेत्र से वस्तुओं की खरीद से माँग सृजित करता है। और भी, हस्तांतरण भुगतान (उदाहरणार्थ, पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, अनुदान, इत्यादि) प्रवाह में भराव होते हैं (क्योंकि यह घरेलू क्षेत्र में माँग सृजित करते हैं) आय तथा व्यय के प्रवाह को नीचे चित्र 2.3 में दिखाया गया है:

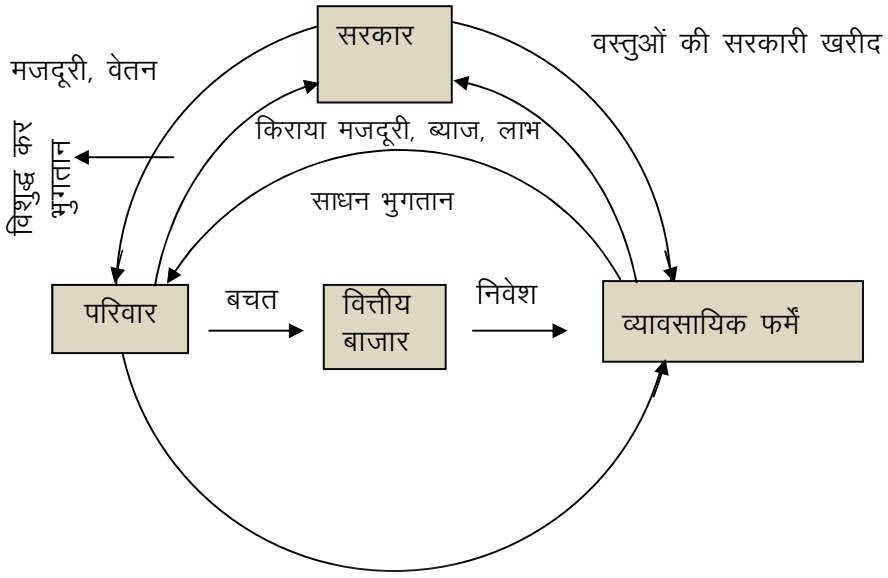

चित्र 2.3: त्रि–क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय तथा व्यय का चक्रीय प्रवाह

चित्र 2.3 में हम केवल परिवारों, फर्मों तथा सरकार के बीच मुद्रा प्रवाहों को ज्ञात करते हैं। सरकार फर्मों तथा परिवारों से वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदती है, जिसे चित्र 2.3 के ऊपरी हिस्से में प्रदर्शित किया गया है। सरकारी व्यय को मुख्य रूप से करों तथा ऋणों से वित्त पोषित किया जात है। द्वितीय मुद्रा प्रवाह परिवारों तथा व्यावसायिक फर्मों के द्वारा किए गए सभी भुगतानों को दिखाता है। परिवार सरकार को प्रत्यक्ष कर का भुगतान करता है, जबकि फर्मों की आय पर निगम कर के रूप में कर लगाया जाता है, लेकिन अंततः परिवारों द्वारा वहन किया जाता है। ये मुद्रा प्रवाह परिवारों तथा फर्मों के हस्तांतरण भुगतानों को कम करके इनके द्वारा किए गए कर भुगतानों को शामिल करता है। परिवारों तथा फर्मों की भाँति सरकार भी बचत करती है तथा वित्तीय बाजार से ऋण लेती है (भ्रम को दूर करने हेतु, वित्तीय बाजार से सरकार की ओर मुद्रा प्रवाह को हमने चित्र 2.3 में नहीं दिखाया है)। यदि बजट में अतिरेक है जो एक दुर्लभ घटना है तब अतिरेक के विस्तार के लिए आय के प्रवाह से विशुद्ध रिसाव होंगे तथा मुद्रा सरकार से पूँजी बाजार की ओर प्रवाहित होगी। यदि अतिरेक को सरकार द्वारा खर्च नहीं किया जा रहा है तो प्रवाह संकुचित (कम) होगा। बजट में घाटा एक सामान्य घटना है, जो सामान्यतः ऋणों के द्वारा पूरा किया जाता है तथा इसलिए, मुद्रा का प्रवाह पूँजी बाजार से सरकार की ओर होगा। इस प्रकार, बजट घाटे का तात्पर्य अर्थव्यवस्था में भरावों से होता है। यदि सरकार संतुलित बजट को बनाए रखती है, अर्थात् प्रवाह से कर के रूप में निकाली गई मुद्रा की मात्रा को सरकारी व्यय के माध्यम से बिल्कुल (एकदम) प्रतिस्थपित किया जाएगा।

2.2.6 चार–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह

यदि, हम बाह्य क्षेत्र को शेष विश्व के साथ आय के प्रवाह में शामिल नहीं करते हैं, तो प्रतिरूप (मॉडल) अपूर्ण बना रहेगा। घरेलू अर्थव्यवस्था शेष विश्व से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (आयातों तथा निर्यातों) तथा वित्तीय प्रवाहों के माध्यम से जुड़ी होती है। चित्र 2.4 में, हम जब विदेशी व्यापार विद्यमान होता है तो एक खुली अर्थव्यवस्था में मुद्रा प्रवाह कैसे होता है, को दिखाते हैं।

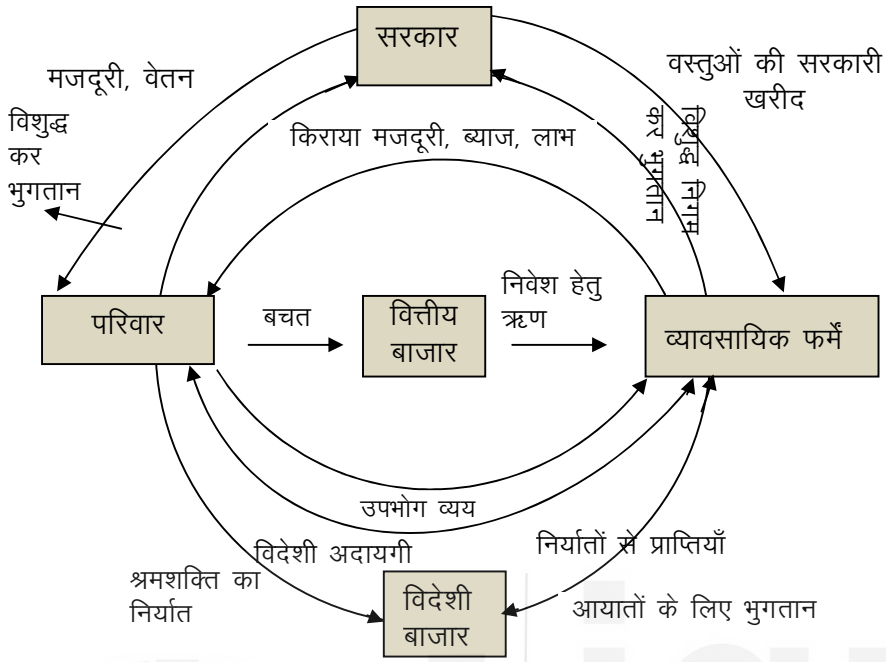

चित्र 2.4: एक खुली अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

चित्र का निचला भाग विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में मुद्रा के प्रवाह को दिखाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात, भरावों (निर्यात) से प्राप्तियों के रूप में राष्ट्र के अन्दर मुद्रा लाते हैं। दूसरी तरफ, आयात प्रवाह से मुद्रा के उत्प्रवाह (रिसावों) का कारण होता है। यदि निर्यात तथा आयात समान हैं तो व्यापार शेष विद्यमान होता है। सामान्यतः, निर्यात आयात के समान नहीं होते हैं। यदि निर्यात के मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होते हैं तो व्यापार अतिरेक घटित होते हैं। इसके विपरीत, यदि निर्यात के मूल्य आयात के मूल्य से कम है। तो व्यापार घाटा उत्पन्न होता है। एक खुली अर्थव्यवस्था में, राष्ट्र आपस में कोषों को उधार लेकर तथा देकर (वित्तीय बाजार) सम्पर्क करते हैं। विश्व के वित्तीय बाजार इन दिनों अच्छी तरह से एकीकृत हो गए हैं।

जब निर्यात (X) आयात (M) से अधिक होते हैं तो अर्थव्यवस्था में व्यापार अतिरेक होता है तथा इसलिए निवल अथवा विशुद्ध पूँजी चक्रीय प्रवाह होगा। विशुद्ध पूँजी चक्रीय प्रवाह का तात्पर्य है कि विदेशी नागरिक अपने घरेलू निर्यात की खरीद को वित्त करने के लिए घरेलू बचतकर्त्ताओं से ऋण लेंगे। इसलिए, घरेलू बचतकर्त्ता विदेशी नागरिकों को उधार देते हैं और बाह्य वित्तीय सम्पत्ति अर्जित करते हैं। अतः, आय का प्रवाह अतिरेक की मात्रा से बढ़ (भराव) जाता है। दूसरी ओर, यदि निर्यात घाटा अथवा आयात अतिरेक है (अर्थात जब आयात निर्यात से अधिक है), तो राष्ट्र का "व्यापार शेष" प्रतिकूल व्यापार घाटा होता है। अतः परिवार एवं व्यावसायिक फर्में शेष विश्व से ऋण (उधार) लेते हैं। इसलिए, विदेशी नागरिक घरेलू वित्तीय परिसम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे। इस तरह की स्थितियों में आय का प्रवाह घाटे की मात्रा से कम (रिसाव) हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) आय के प्रवाह से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

2) मुद्रा प्रवाह तथा वास्तविक चक्रीय प्रवाह में विभेद कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) द्वि–क्षेत्रीय प्रतिरूप में आय का प्रवाह कैसे होता है? वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) भरावों और रिसावों क मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5) आय के प्रवाह में सरकारी क्षेत्र के समावेशन के विभिन्न प्रभाव क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6) प्रवाह पर अनुकूल और प्रतिकूल व्यापार शेषों के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 राष्ट्रीय आय तथा सम्बन्धित समुच्चय

जैसा कि नाम से पता चलता है कि राष्ट्रीय आय को समय की एक अवधि के दौरान राष्ट्र की आय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह राष्ट्र की क्रयशक्ति को इंगित करती है। इसे एक वर्ष में अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मौद्रिक्र मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह उत्पादक तथा उपभोक्ता वस्तुओं चाहे वे स्वःउपभोग अथवा लेनदेन के लिए ही शामिल करता है। यह अर्धनिर्मित तथा ग़ैर–आर्थिक वस्तुओं को शामिल नहीं करता है। समष्टिगत समुच्चयों (समग्रों) की अनेक अवधारणाएँ हैं। प्रत्येक अवधारणा का विशिष्ट अर्थ मापने की विधि तथा प्रयोग हैं। ये हैं:

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price - GDP_{MP})
2. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Market Price - GNP_{MP})
3. बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Market Price - NNP_{MP})
4. बाजार कीमत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product at Market Price - NDP_{MP})
5. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Factor Cost - GDP_{FC})
6. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Factor Cost - GNP_{FC})
7. साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost - NNP_{FC})
8. आधार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Basic Price)

सकल घरेलू उत्पाद पर देश की सीमाओं के अंतर्गत उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का योग है। उदाहरण के लिए, भारत की सकल घरेलू उत्पाद भारत के अन्दर विदेशी नागरिकों तथा भारत के निवासियों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को शामिल करता है, लेकिन यह विदेश में निवास कर रहे भारतीयों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को शामिल नहीं करता है। हम ऊपर वर्णित अवधारणाओं पर आगे विस्तृत वर्णन करते हैं।

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP})

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एक देश की सीमाओं के अंतर्गत उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य, करों का घटाव एवं आयातों पर अनुदान का योग है। सकल घरेलू उत्पाद एक चक्रीय प्रवाह अवधारणा है, अर्थात्, एक वर्ष के दौरान उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रकार है। यह पूर्व वर्ष के उत्पादन को शामिल नहीं करता है। सकल घरेलू उत्पाद की गणना करते समय, ग़ैर–कानूनी क्रियाओं के माध्यम से अर्जित आय को हटा दिया जाता है। इसके आगे, सकल घरेलू उत्पाद से हस्तांतरण भुगतान, पूँजीगत लाभों तथा वित्तीय लेन–देनों को भी हटा दिया जाता है।

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) को निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है:

GDP_{MP} = राष्ट्र के निवासियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य + विदेशी नागरिकों के द्वारा स्थानीय स्तर पर अर्जित आय – विदेशों में रह रहे राष्ट्र के नागरिकों की प्राप्त आय

2. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP})

GNP_{MP} को निजी घरेलू उत्पादन के साधनों, जो एक वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था तथा विदेशों में रोजगारित हो सकते हैं, के द्वारा एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य के रूप में परिभाषित किया गया है। GNP_{MP} तथा GDP_{MP} के मध्य अन्तर "विदेशों से शुद्ध साधन आय" (Net Factor Income from abroad - NFIA) है। विदेशों से शुद्ध साधन आय कुल मात्रा जिसे एक देश के नागरिक विदेशों से अर्जित करते हैं तथा कुल मात्रा जिसे विदेशी नागरिक घरेलू अर्थव्यवस्था में अर्जित करते हैं का अन्तर है। इस प्रकार,

GNP_{MP} = अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य + विदेशों में राष्ट्रीय निवासियों द्वारा अर्जित आय – विदेशी नागरिकों के द्वारा स्थानीय स्तर पर अर्जित आय

अथवा

$GNP_{MP} = GDP_{MP}$ + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) धनात्मक है, अर्थात् देश के निवासियों के द्वारा अर्जित आय उस देश में विदेशी नागरिकों की आय से अधिक है, तब GNP > GDP है। दूसरी तरफ, यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) ऋणात्मक है, अर्थात् देश के निवासियों के द्वारा अर्जित आय उस देश में विदेशी नागरिकों की आय से कम है, तब GNP < GDP है।

3. बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP})

NNP_{MP} मूल्यह्रास को घटाते हुए, जो कि स्थिर पूँजी का उपभोग है सभी अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य है। इस प्रकार,

$NNP_{MP} = GNP_{MP}$ – मूल्यह्रास

अथवा,

$NNP_{MP} = GDP_{MP}$ – मूल्यह्रास + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

NNP तथा GNP के मध्य अन्तर मूल्यह्रास है।

मूल्यह्रास = NNP_{MP}- GNP_{MP}

4. बाजार कीमत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{MP})

NDP_{MP} को एक वित्तीय वर्ष के दौरान सामान्य निवासियों (Normal Residents) तथा ग़ैर–निवासियों (non-residents) के द्वारा एक देश की घरेलू सीमाओं में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार मूल्य में से मूल्यह्रास को घटाकर के परिभाषित किया जाता है। इस प्रकार,

$NDP_{MP} = GDP_{MP}$ – मूल्यह्रास (Depreciation)

$NDP_{MP} = NNP_{MP}$ – NFIA

5. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC})

NDP_{FC} को अर्जित की गई सभी घरेलू आय के योग के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह उत्पादन के सभी साधनों के द्वारा अर्जित की गई कुल साधन आय है। इसकी NDP_{MP} में से विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों (Net Indirect Taxes, NIT) को घटाते हुए गणना की जा सकती है। विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर अप्रत्यक्ष करों तथा अनुदान के अंतर के बराबर है। NDP_{FC} की निम्न रूप में गणना की जा सकती है:

NDP_{FC} = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय

अथवा,

$NDP_{FC} = NDP_{MP}$ – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

अथवा,

$NDP_{FC} = NDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

6. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GDP_{FC})

यह एक वित्तीय वर्ष के दौरान एक देश की घरेलू सीमाओं में सभी उत्पादकों के द्वारा विशुद्ध मूल्य वृद्धि का योग है। इसकी GDP_{MP} में से विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों (Net Indirect Taxes, NIT) को घटाते हुए गणना की जा सकती है। प्रतीकात्मक रूप से,

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

अथवा

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

अथवा

$GDP_{FC} = NDP_{FC}$ + मूल्य ह्रास

= कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय

7. साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{FC})

यह एक वित्तीय वर्ष में एक देश के सामान्य निवासियों के द्वारा एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित साधन लागत पर मापी गई सभी वस्तुओं एवं सेवाओं का योग है।

$GNP_{FC} = GDP_{FC}$ + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA)

$GNP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

8. आधार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद

सकल घरेलू उत्पाद किसी देश की सीमाओं के अन्दर उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य, करों के घटाव एवं आयात पर आर्थिक सहायता का योग है।

टिप्पणी:

I) सकल तथा विशुद्ध के मध्य अन्तर मूल्यह्रास है।

विशुद्ध = सकल – मूल्यह्रास

सकल = विशुद्ध + मूल्यह्रास

II) राष्ट्रीय तथा घरेलू के मध्य अन्तर विदेशों से शुद्ध साधन भुगतान (Net Factor Payment - NFP) है:

शुद्ध साधन भुगतान (NFP) = सामान्य निवासियों के द्वारा विदेशों से साधन भुगतान – एक देश के घरेलू सीमाओं के अंतर्गत ग़ैर–निवासियों का साधन भुगतान

राष्ट्रीय = घरेलू + शुद्ध साधन भुगतान (NFP)

III) बाजार कीमत तथा साधन लागत के मध्य अन्तर विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Taxes, NIT) है।

विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता

बाजार कीमत = साधन लागत + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

साधन लागत = बाजार कीमत – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

IV) राष्ट्रीय आय = $\mathbf{NNP_{FC}}$

V) विशुद्ध घरेलू आय = $\mathbf{NDP_{FC}}$

उदाहरण 2.1: निम्नांकित समंकों की सहायता से साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद तथा बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की गणना कीजिए।

		(करोड़ रुपए में)
1)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	26,142
2)	प्रचालन अधिशेष	12,031
3)	स्वःनियोक्ता की मिश्रित आय	28,620
4)	स्थिर पूँजी का उपभोग	4,486
5)	अप्रत्यक्ष कर	9,703
6)	अनुदान	1,350

हल:

GNP_{FC} = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय + स्थिर पूँजी का उपभोग

= 26142 करोड़ रुपए + 12031 करोड़ रुपए + 28620 करोड़ रुपए + 4486 करोड़ रुपए

= 71,279 करोड़ रुपए

GNP_{MP} = GNP_{FC} + अप्रत्यक्ष कर – अनुदान

= 71279 + 9703 – 1350

= 79632 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.2: निम्नांकित समंकों की सहायता से साधन लागत पर (क) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर, तथा (ख) विशुद्ध घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
(i) बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद	1,400
(ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(–) 20
(iii) साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	1,300
(iv) स्थिर पूँजी उपभोग	100
(v) राष्ट्रीय ऋण ब्याज	18

हल:

(a) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर = बाजार कीमत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – स्थिर पूँजी का उपभोग)

NIT = 1,400 – (1,300 – 100)

= 1,400 –1,300 +100

= 200 करोड़ रुपए

(b) साधन लागत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद = साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – स्थिर पूँजी का उपभोग – विदेशों से शुद्ध साधन आय

NDP_{FC} =1,300 – 100 – (–) 20

=1,300 – 100 + 20 = 1,220 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.3: निम्नांकित समंकों की सहायता से NNP_{FC}, GNP_{MP}, GNP_{FC}, और NDP_{MP} की गणना कीजिए ।

	मूल्य (करोड़ रुपए में)
NDP_{FC}	1,33,151
मूल्य ह्रास	11,242
विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	19,183
विदेशों से शुद्ध आय	(–) 681

हल:

NNP_{FC} = NDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध आय

= 1,33,151 + (–) 681 = 1,32,470 करोड़ रुपए

NNP_{MP} = NNP_{FC} + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

= 1,32,470 + 19,183 = 1,51,653 करोड़ रुपए

GNP_{MP} = NNP_{MP} + मूल्य ह्रास

= 1,51,653 + 11,242 = 1,62,895 करोड़ रुपए

GDP_{MP} = GNP_{MP} – विदेशों से शुद्ध आय
=1,62,895 – (–681) = 1,63,576 करोड़ रुपए

GDP_{FC} = GDP_{MP} – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर
= 1,63,576 – 19,183 = 1,44,393 करोड़ रुपए

GNP_{FC} = GDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध आय
= 1,44,393 + (–681) = 1,43,712 करोड़ रुपए

NDP_{MP} = GDP_{MP} – मूल्य ह्रास
= 1,63,576 – 11,242 = 1,52,334 करोड़ रुपए

2.4 सम्बन्धित समुच्चयों का माप

NDP_{FC} अथवा घरेलू साधन आय दो क्षेत्रों में उत्पन्न हो सकती है: i) निजी क्षेत्र, तथा ii) सार्वजनिक अथवा सरकारी क्षेत्र। निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} उस NDP_{FC} का भाग है जो कर्मचारियों के पारिश्रमिक, प्रचालन, अधिशेष तथा स्वःनियोक्ता की मिश्रित आय के रूप में है। निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} को निम्न प्रकार से दिया गया है:

निजी क्षेत्र से प्राप्त NDP_{FC} = NDP_{FC} – सरकारी विभागीय उद्यमवृत्तियों से प्राप्त आय – ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें

सरकारी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय के निम्नलिखित दो घटक हैं:

i) सरकार की सम्पत्ति तथा उद्यमवृत्ति से प्राप्त आय; और

ii) ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें।

2.4.1 निजी आय

निजी आय में सभी स्रोतों से आय तथा सरकार एवं शेष विष्व (विदेशों) से वर्तमान हस्तांतरण से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय को शामिल किया जाता है। यह सभी स्रोतों से प्राप्त आय हो सकती है, अर्थात्, साधन आयों एवं हस्तांतरण आय को निजी क्षेत्र के द्वारा प्राप्त किया है। यह "विदेशों से शुद्ध साधन आय" (Net Factor Income from Abroad - NFIA) तथा राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज (सरकार द्वारा ऋणों पर दिया गया ब्याज) को भी शामिल करता है। अतः निजी आय सभी प्रकार की आयों (अर्जित एवं अनार्जित) को शामिल करती है।

निजी आय = निजी क्षेत्र को प्राप्त NDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) + सरकार से विशुद्ध हस्तांतरण + शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण भुगतान + राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज

2.4.2 व्यक्तिक (व्यक्तिगत) आय

व्यक्तिगत आय एक वर्ष में वर्तमान हस्तांतरण भुगतानों एवं साधन आयों के रूप में सभी स्रोतों से व्यक्तियों के द्वारा प्राप्त सभी प्रकार की आयों का योग है। यह साधन आय तथा हस्तांतरण आय को शामिल करता है। यह उद्यमों के लाभ कर तथा प्रतिधारित आय को शामिल नहीं करता है।

व्यक्तिगत आय = निजी आय – निगम कर – अवितरित लाभ + हस्तांतरण भुगतान

2.4.3 प्रयोज्य आय

प्रयोज्य आय को करों के बाद आय के रूप में परिभाषित किया जाता है, अर्थात्, अपनी आय तथा सम्पत्ति पर सभी प्रकार के लगाए गए करों की कटौती के बाद व्यक्तियों की शेष आय।

प्रयोज्य आय = व्यक्तिगत आय – अप्रत्यक्ष कर – सरकारी प्रशासनिक विभागों की विविध प्राप्तियाँ (शुल्क, जुर्माने, इत्यादि)

उदाहरण 2.4: निम्नांकित समंकों से व्यक्तिगत आय तथा निजी आय की गणना कीजिए।

मद	करोड़ रुपए में
निजी उद्यम की प्रतिधारित आय	10
सरकारी प्रशासनिक विभागों की विविध प्राप्तियाँ	50
व्यक्तिगत प्रयोज्य आय	180
व्यक्तिगत कर	30
निगम लाभ कर	10

हलः

व्यक्तिगत आय = व्यक्तिगत प्रयोज्य आय + व्यक्तिगत कर + सरकारी विभागों की विविध प्राप्तियाँ

= 180 + 30 + 50 = 260 करोड़ रुपए

निजी आय = व्यक्तिगत आय + निजी उद्यमों की प्रतिधारित आय + निगम लाभ कर

= 260 + 10 + 10 = 280 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.5: निम्नांकित समंकों से (क) व्यक्तिगत आय तथा (ख) व्यक्तिगत प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	करोड़ रुपए में
1. निजी आय	2000
2. निजी हित के उद्यमों की विशुद्ध प्रतिधारित आय	600
3. परिवारों के द्वारा भुगतान किया गया प्रत्यक्ष कर	200
4. निगम कर	350
5. राष्ट्रीय ऋण ब्याज	250

हलः

a) व्यक्तिगत आय = निजी आय – निजी हित के उद्यमों की विशुद्ध प्रतिधारित आय – निगम कर

= 2000 – 600 – 350 = 1050 करोड़ रुपए

b) निजी प्रयोज्य आय = व्यक्तिगत आय + निजी निगमों की प्रतिधारित आय + निगम लाभ कर

= 1050 – 200 = 850 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.6: निम्नांकित समंकों से विशुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
i) बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद	2000
ii) शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	(–)200
iii) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	150
iv) विदेशों से शुद्ध साधन आय	60
v) राष्ट्रीय ऋण ब्याज	70
vi) स्थिर पूँजी का उपभोग	200
vii) सरकार के वर्तमान स्तांतरण	150

हलः

विशुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Net National Disposable Income, NNDI) = GDP_{MP} – विदेशों से शुद्ध साधन आय – स्थिर पूँजी का उपभोग – शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण

NNDI = 2000 – 60 – 200 – (–200)

= 1940 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.7: निम्नांकित समंकों से सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

मद	(करोड़ रुपए में)
i) राष्ट्रीय आय	2,000
ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(–)50
iii) स्थिर पूँजी का उपभोग	200
iv) शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	150
v) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	250

हलः

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Gross National Disposable Income , GNDI) = राष्ट्रीय आय + स्थिर पूँजी का उपभोग + शेष विश्व के लिए विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

GNDI = 2000 करोड़ रुपए + 200 करोड़ रुपए + 150 करोड़ रुपए + 250 करोड़ रुपए

GNDI = 2600 करोड़ रुपए

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = 2600 करोड़ रुपए

उदाहरण 2.8: निम्नांकित समंकों से राष्ट्रीय प्रयोज्य आय को ज्ञात कीजिए।

मदें	(करोड़ रुपए में)
(i) सरकारी प्रशासनिक विभागों से वर्तमान हस्तांतरण	215
(ii) ग़ैर–विभागीय उद्यमों की बचतें	7
(iii) साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद	325
(iv) विदेशों से शुद्ध साधन आय	12
(v) शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण	12
(vi) अप्रत्यक्ष कर	35
(vii) आर्थिक सहायता	10

हल:

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद + शेष विश्व से विशुद्ध वर्तमान हस्तांतरण + विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता)

NDI = 325 करोड़ रुपए +12 करोड़ रुपए + (35 करोड़ रुपए –10 करोड़ रुपए)

=325 करोड़ रुपए +12 करोड़ रुपए + 25 करोड़ रुपए

=362 करोड़ रुपए

बोध प्रश्न 2

1) "राष्ट्रीय आय" का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या सकल घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) व्यक्तिगत आय तथा निजी आय के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) व्यक्तिगत आय और प्रयोज्य आय के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने एक अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन (लेखा पद्धति) की संरचना उपलब्ध कराई है। अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से घरेलू क्षेत्र, फर्म क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व के माध्यम से कार्य करती है। राष्ट्रीय अय लेखांकन लेनदेनों अथवा इन क्षेत्रों के बीच आय तथा व्ययों के प्रवाहों को अंकित करता है। इन अंकित आँकड़ों (समंकों) का प्रयोग करके किसी अर्थव्यवस्था के कार्य को समझा जा सकता है, जिनका विभिन्न समग्रों जैसे सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) तथा सकल राष्ट्रीय आय (GNI) को मापने में भी प्रयोग किया जाता है।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) यह एक अर्थव्यवस्था के सभी विभिन्न क्षेत्रों के मुद्रा आय के चक्रीय प्रवाह अथवा वस्तुओं एवं सेवाओं के चक्रीय प्रवाह को दर्शाते हैं।

2) उपभाग 2.2.1 का संदर्भ देखिए।

3) उपभाग 2.2.2 का संदर्भ देखिए।

4) उपभाग 2.2.4 का संदर्भ देखिए।

5) धनात्मक प्रभावः व्यय तथा हस्तांतरण भुगतानों के साथ चक्रीय प्रवाह को बढ़ाता है। ऋणात्मक प्रभावः करों के लगाने से प्रवाह घटता है।

6) प्रतिकूल व्यापार : रिसाव; तथा अनुकूल व्यापारः भराव।

बोध प्रश्न 2

1) अर्थव्यवस्था में उत्पादित उत्पादन का योग।

2) हाँ; यदि विदेशों से शुद्ध साधन आय (NFIA) ऋणात्मक है।

3) चित्र 2.1 का प्रयोग कीजिए तथा उपभाग 2.4.1 तथा 2.4.2 का संदर्भ देखिए।

4) चित्र 2.1 का प्रयोग कीजिए तथा उपभाग 2.4.2 तथा 2.4.3 का संदर्भ देखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 आर्थिक निष्पादन के माप*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

3.2.1 व्यय विधि

3.2.2 आय विधि

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

3.6.1 चालू खाता

3.6.2 पूँजी खाता

3.7 सार संक्षेप

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- राष्ट्रीय आय के माप की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- बचत तथा धन के मध्य अन्तर कर सकेंगे;
- वास्तविक तथा मौद्रिक आय के बीच अंतर कर सकेंगे; और
- एक अर्थव्यवस्था के भुगतान शेष की अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हम राष्ट्रीय आय लेखांकन की विभिन्न अवधारणाओं की चर्चा कर चुके हैं। इस इकाई में हम राष्ट्रीय आय को मापने की विधियों की चर्चा करेंगे। राष्ट्रीय आय का मापन इस अर्थ में लेखा ढाँचे में निष्पादित किया जाता है कि राष्ट्रीय आय में सम्मिलित की जाने वाली प्रत्येक मद से जुड़ी एक आर्थिक क्रिया होती है। राष्ट्रीय आय एक प्रवाह है तथा यह एक विशिष्ट समयावधि के लिए मापी जाती है, सामान्यतः एक वर्ष के लिए। हाल ही के समय में, कुछ समग्रों जैसे सकल घरेलू उत्पाद को त्रैमासिक आधार पर मापा जाता है। राष्ट्रीय आय को निम्नलिखित पदों के रूप में मापा जाता है:

1) आर्थिक अभिकर्त्ताओं के द्वारा अन्तिम उत्पादन की खरीद द्वारा खर्च की गई राशि (व्यय दृष्टिकोण)
2) उत्पादन के साधनों द्वारा प्राप्त आय (आय दृष्टिकोण)

* डॉ० सरबजीत कौर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज(संध्या), दिल्ली विश्वविद्यालय

3) उत्पादित अन्तिम उत्पाद की मात्रा (उत्पाद दृष्टिकोण)

तीनों विधियाँ आर्थिक क्रियाओं को देखने के तीन अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं लेकिन ये एक अर्थव्यवस्था में तात्कालिक आर्थिक क्रियाओं के समान माप प्रदान करते हैं।

3.2 राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि राष्ट्रीय आय को मापने की तीन विधियाँ हैं। हम नीचे विस्तार से प्रत्येक विधि का वर्णन करते हैं।

3.2.1 व्यय विधि

एक दी गई समयावधि के दौरान घटित होने वाली आर्थिक क्रियाओं की मात्रा को अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय की जाने वाली राशि के पद में मापा जा सकता है। आपको ध्यान देना चाहिए कि इस विधि में पुनः बिक्री के लिए खरीदी गई वस्तुओं पर व्यय सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस विधि के अनुसार, आर्थिक क्रिया को दर्शाने के लिए बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद पर अन्तिम व्यय को शामिल किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत, निजी उपभोग व्यय (Private Consumption Expenditure - C), निजी निवेश व्यय (Private Investment Expenditure – I), सरकारी व्यय (Government Expenditure - G) तथा विशुद्ध विदेशी व्यय अथवा विशुद्ध निर्यात (Net Foreign Expenditure Or Net Export (NX) सकल घरेलू उत्पाद के घटक हैं। अतः इस विधि में, अर्थव्यवस्था के अन्तिम व्यय को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों यथा घरेलू, व्यावसायिक, सरकारी तथा शेष विश्व के द्वारा किए गए व्यय को एक साथ शामिल किया जाता है। इस विधि के अनुसार, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Y) एक वित्तीय वर्ष के दौरान एक अर्थव्यवस्था में सभी अन्तिम व्यय का योग है, जिसे निम्नांकित आय–व्यय सर्वसमिका (Income- Expenditure Identity) के द्वारा प्रदर्शित किया गया है:

$$Y = C + I + G + NX$$

सकल घरेलू उत्पाद से विभिन्न समष्टिगत समग्रों को प्राप्त करने की प्रक्रिया की इकाई 2 में चर्चा की गई है। हम सकल घरेलू उत्पाद के घटकों पर निम्न प्रकार से चर्चा करते हैं:

1. **उपभोग**

   उपभोग व्यय घरेलू क्षेत्र के द्वारा किया जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष के दौरान अन्तिम उपयोगकर्त्ताओं के द्वारा बेची गई वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय को शामिल करता है। यह टिकाऊ वस्तुओं जैसे कार, फर्नीचर, इत्यादि तथा ग़ैर–टिकाऊ वस्तुओं जैसे भोजन, ईंधन, इत्यादि एवं सेवाओं जैसे बैंकिंग, स्वास्थ्य इत्यादि को समाहित करते हैं।

2. **निवेश**

   वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए व्यावसायिक फर्मों द्वारा साधनों में निवेश किया जाता है। यह व्यावसायिक स्थिर निवेश आवासीय निवेश एवं माल सूची निवेश अथवा स्टॉक में परिवर्तन को शामिल करता है।

3. **सरकारी व्यय**

   यह व्यय स्थानीय, राज्य एवं केन्द्रीय स्तर पर सरकारों द्वारा किया जाता है सरकार अपने कर्मचारियों के वेतन, सामाजिक सुरक्षा लाभों जैसे चिकित्सा लाभ, बेरोजगारी भत्ता इत्यादि के लिए व्यय का भुगतान करती है।

4. **विशुद्ध निर्यात**

विशुद्ध निर्यात को निर्यात एवं आयात के अन्तर के रूप में परिभाषित किया जाता है। निर्यात को विदेशियों द्वारा घरेलू स्तर पर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय के रूप में देखा जा सकता है जबकि आयात घरेलू निवासियों के द्वारा विदेशी वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय होता है। जब निर्यात का मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होता है तब विशुद्ध निर्यात धनात्मक होता है तथा इसका उल्टा भी।

व्यय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ अपनाई जानी चाहिए:

1. 'दोहरी गणना' की समस्या से बचने के लिए राष्ट्रीय आय में केवल अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय आय में पूर्व प्रयुक्त वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद को शामिल नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इन वस्तुओं को पहले से ही राष्ट्रीय आय में शामिल किया जा चुका है जिस समय इनका उत्पादन हुआ था। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा के लिए दलाली (कमीशन), एवं ब्रोकरेज एक तात्कालिक क्रिया है तथा इसे शामिल किया जाना चाहिए।
3. खुद काबिज मकान का आरोपित मूल्य शामिल किया जाना चाहिए।
4. उद्यम, परिवारों तथा सरकार तथा अचल पूँजी के स्व लेखा के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

उदाहरण 3.1: निम्न आँकड़ों से सकल घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए:

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
1. व्यक्तिगत उपभोग व्यय	45000
2. सरकारी उपभोग व्यय	5000
3. सकल घरेलू स्थिर निवेश	5000
4. मालसूची में वृद्धि	1000
5. वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात	6000
6. वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात	7000
7. विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	3500
8. मूल्यह्रास	4500

हल:

सकल घरेलू उत्पाद = 1 + 2 + 3 + 4 + 5 – 6

= 45000 + 5000 + 5000 + 1000 + 6000 – 7000

= 55,000 करोड़ रुपए

3.2.2 आय विधि

उत्पाद का मूल्य उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतान के बराबर है। सामान्यतः चार उत्पादन के साधनों भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमी हैं, जिन्हें क्रमशः किराया, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप में पारिश्रमिक दिया जाता है। इस विधि के अनुसार, राष्ट्रीय आय को सभी उत्पादन के साधनों को किए गए भुगतानों के पदों में मापा जाता है।

अतः इस दृष्टिकोण के आधार पर, कर्मचारियों का पारिश्रमिक, सकल प्रचालन अधिशेष, मिश्रित आय तथा विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों का योग, बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद है, जो उत्पादन तथा आयात पर करों तथा उत्पादन पर प्रतिदान (आर्थिक सहायता) का अन्तर है। आय पक्ष दृष्टिकोण उत्पादन प्रक्रिया में सकल घरेलू उत्पाद के लिए विभिन्न साधनों के योगदान को दिखाता है।

1) **कर्मचारियों का पारिश्रमिकः** यह मजदूरी, वेतन, कर्मचारी लाभ जैसे नियोक्ता की पेंशन, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि में योगदान का समावेश करता है। यह लेखांकन अवधि के दौरान नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों को श्रम के लिए नकद या वस्तु रूप में दिए जाने वाला कुल पारिश्रमिक होता है। यह मजदूरी तथा वेतन (नकद या वस्तु रूप में) एवं नियोक्ता के सामाजिक अंशदान में विभाजित किया जाता है।

2) **सकल प्रचालन अधिशेष** : यह किराया, ब्याज, रॉयल्टी एवं लाभ के रूप में सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठानों से उत्पादन प्रक्रिया के दौरान विशुद्ध व्यावसायिक आय है। लाभ में लाभांश, निगम करों एवं प्रतिधारित आय को शामिल किया जाता है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statistical Office - CSO) "कुल उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ती उपभोग, कर्मचारियों का पारिश्रमिक (स्व–नियोजित की श्रम आय का शामिल करते हुए), स्थिर पूँजी के उपभोग एवं विशुद्ध अप्रत्यक्ष करों के योग के अन्तर" के रूप में प्रचालन अधिशेष को परिभाषित किया जाता है। इस प्रकारः

सकल प्रचालन अधिशेष = किराया + ब्याज + रॉयल्टी + लाभ
= बाजार कीमत पर उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग – कर्मचारियों का पारिश्रमिक – स्थिर पूँजी उपभोग – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

3) **स्व–नियोजित की आयः** यह एक अनिगमित उद्यमों के मालिक अथवा मालिकों के परिवारों के द्वारा निष्पादित कार्य के लिए पारिश्रमिक है, जिसे मिश्रित आय भी कहा जाता है। पूँजी आय, श्रम आय लाभों की संयुक्त आय के रूप में अर्जित मिश्रित आय मालिक की आय (पूँजी, भूमि तथा कौशल के स्वामी (मालिक)) होती है। इस समूह की आय को मिश्रित आय के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है जो उनकी आय का अनुपात मजदूरी अथवा लाभ के समान है। मिश्रित आय प्रचालन अधिशेष से इस अर्थ में अलग है कि स्वनियोजितों के पूर्ववर्तीय उपलब्ध हैं, जबकि बाद में, निगम तथा अर्ध–निगम उद्यमों का उपार्जित होता है।

4) **उत्पादन तथा आयातों पर कर से उत्पादन पर प्रतिदानों का अन्तरः** भारत में पूर्ववर्ती अनिवार्य, गैर–वापसी भुगतानों या सामान्य सरकार अथवा संस्थानों से मिलकर बना होता है, वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन तथा आयात के सम्बन्ध में श्रम का रोजगार, तथा स्वामित्व अथवा भूमि का प्रयोग, उत्पादन में प्रयोग की गई इमारतों अथवा अन्य परिसम्पत्तियाँ। उत्तरार्द्ध में सभी प्रतिदान शामिल होते हैं जो केवल उत्पादन पर उन प्रतिदानों को छोड़कर जिन्हें घरेलू उत्पादक इकाइयाँ उत्पादन प्रक्रिया में संलग्न होने के कारण प्राप्त कर सकती हैं।

5) आय विधि में निम्नलिखित सावधानियाँ शामिल होनी चाहिएः
आय विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का सही आकलन करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेनी होंगीः
   1) हस्तांतरण भुगतानों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।
   2) आकस्मिक लाभों जैसे लाटरियों से आय, राष्ट्रीय आय का भाग नहीं होना चाहिए।

3) अवैध कार्यों से प्राप्त आय (जैसे चोरी, तस्करी, इत्यादि) को सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

4) राष्ट्रीय आय में पुरानी वस्तुओं की बिक्री एवं खरीद से प्राप्त आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कमीशन तथा ब्रोकरेज के लिए किए गए भुगतान को शामिल किया जाना चाहिए।

5) धन कर, सम्पत्ति कर, उपहार कर को वर्तमान आय से भुगतान नहीं किया जाता है, इसलिए इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

6) स्वयं के मकानों का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए।

7) स्व–उपभोग के लिए उत्पादन के मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

1) व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय आकलन में शामिल चरणों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय आय के आकलन में आय विधि, व्यय विधि से किस प्रकार भिन्न है? वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.2.3 मूल्य वर्धित विधि (Value-Added Method)

इस विधि को उत्पादन विधि अथवा उत्पाद विधि से भी जाना जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था की घरेलू सीमाओं में उत्पादन प्रक्रिया में प्रत्येक उत्पादक उद्यम के द्वारा किए गए योगदान को मापता है। मध्यवर्ती उत्पादन चरण में उपयोग की गई किसी भी वस्तुओं एवं सेवाओं को छोड़कर यह विधि उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार कीमत के योग के द्वारा आर्थिक क्रियाओं को मापती है। इस विधि के अंतर्गत, हम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद को प्राप्त करने के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ते हैं। प्रत्येक फर्म का मूल्य वर्धन इसके उत्पादन के मूल्य तथा अन्य फर्मों से क्रय की गई मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य का अन्तर होता है। दूसरे शब्दों में, यह वस्तुओं के विभिन्न चरणों पर मध्यवर्ती वस्तुओं से अन्तिम उत्पाद के मूल्य के अतिरिक्त है।

सकल मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग

विशुद्ध मूल्य वृद्धि = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास

साधन लागत पर विशुद्ध मूल्य वृद्धि = NVA_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

घरेलू आय (NVA_{FC}) में विदेशों से विशुद्ध साधन लागत के योग द्वारा, हम राष्ट्रीय आय (साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन – NNP_{FC}) प्राप्त करते हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय अथवा NNP_{FC} = सकल उत्पादन – मध्यवर्ती उपभोग – मूल्यह्रास – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से विशुद्ध साधन आय

यह विधि विभिन्न चरणों में राष्ट्रीय आय को मापती है। मूल्य वर्धन का मुख्य लाभ यह है कि यह दोहरी गणना की समस्या की अवहेलना करता है।

उपर्युक्त तीनों विधियों द्वारा आकलित राष्ट्रीय आय अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा मूल्य वर्धित विधि समान हैं, अर्थात्

राष्ट्रीय आय ≡ राष्ट्रीय उत्पाद ≡ राष्ट्रीय व्यय

(जहाँ ≡ सर्वसमिका को दिखाता है)।

मूल्य वृद्धि का आकलन

पद मूल्य वृद्धि उत्पादन इकाई द्वारा उत्पादन में प्रयोग किए गए मध्यवर्ती साधनों में जोड़े गए मूल्यों को संदर्भित करता है। मूल्य वृद्धि, उत्पादन के मूल्य तथा मध्यवर्ती साधनों की लागत के मध्य अन्तर है।

एक उदाहरण की सहायता से मूल्य वृद्धि की अवधारणा की व्याख्या करते हैं।

माना एक कपड़ा फर्म ने कपड़ों का निर्माण करने के लिए 4,000 रुपये मूल्य का कच्चा माल खरीदा तथा 1,000 रुपये मूल्य का श्रम मजदूरी पर रखा। मध्यवर्ती साधनों को 50,000 रुपये में खरीदा। कपड़ा फर्म ने अपने कपड़े के उत्पादन को 55,000 रुपये में बेच दिया। इस प्रकार कपड़ा फर्म के द्वारा मूल्य वृद्धि 5,000 रुपए है।

उत्पाद विधि में शामिल सावधानियाँ:

आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ लेने की आवश्यकता है:

1. केवल साधन आय जो उत्पादकीय सेवाओं के प्रदान के द्वारा अर्जित की गई हैं को शामिल किया जाना चाहिए।
2. अवैध स्रोतों (जैसे तस्करी, चोरी इत्यादि) से अर्जित आय को पृथक किया जाना चाहिए।
3. पुरानी वस्तुओं की बिक्री तथा क्रय के माध्यम से अर्जित आय को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन इस तरह की वस्तुओं की बिक्री को सुविधाजनक बनाने के लिए दिया गया कमीशन तथा दलाली का भुगतान शामिल होना चाहिए।
4. खुद–काबिज भवनों (इमारतों) का आरोपित किराया शामिल किया जाना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई मकान किराए पर है या स्वयं द्वारा उपयोग किया जाता है।
5. स्व उपभोग के लिए उत्पादन का मूल्य शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक किसान स्व उपभोग के लिए उसके द्वारा उत्पादित उत्पादन का एक भाग रखता है। यह बाजार में नहीं लाया जाता है, लेकिन यह उत्पादन में योगदान देता है।
6. परिवार के सदस्यों (घर में बनाने वालों को भोजन पकाने के लिए कहना) द्वारा घरेलू कार्यों को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।

   दूसरी तरफ, वही भोजन यदि घरेलू सहायता (इसके लिए जिसको भुगतान किया जाता है) द्वारा बनाया जाता है तो उसको सकल घरेलू उत्पाद में शामिल किया जाता है।

उदाहरण 3.2: साधन लागत पर विशुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) की गणना निम्नलिखित आँकड़ों से कीजिए।

मदें	मूल्य (करोड़ रुपए में)
कच्चे माल की खरीद	300
मूल्यह्रास	120
बिक्री	2000
उत्पादन शुल्क	200
आरम्भिक स्टॉक	150
मध्यवर्ती उपभोग	480
अन्तिम स्टॉक	100

हल:

उत्पादन का मूल्य = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन

स्टॉक में परिवर्तन = अन्तिम स्टॉक – आरम्भिक स्टॉक

= 100 – 150= –50

अतः उत्पादन का मूल्य = 2000 + (–50)

= 1950 करोड़ रुपए

सकल मूल्य वृद्धि = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग

= 1950 – 480 = 1470 करोड़ रुपए

NDP_{FC} = सकल मूल्य वृद्धि – विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर

NDP_{FC} = 1470 – 200 = 1270 करोड़ रुपए

उदाहरण 3.3:

एक फर्म दूसरी फर्मों से 80,000 रुपए के फल खरीद कर उनसे जैम बनाती है और जैम को बाजार में बेचती है। वह अपने श्रमिकों को मजदूरी के रूप में 50,000 रुपए का भुगतान करती है, कर के रूप में 20,000 रुपए का भुगतान करती है तथा उसका लाभ 40,000 रुपए है। इसका अपनी मूल्य वृद्धि क्या है?

हल:

मदें	मूल्य (रुपए में)
दूसरी फर्मों से खरीदे गए फलों का मूल्य	80,000
श्रमिकों को मजदूरी के रूप में किया गया भुगतान	50,000
करों का भुगतान	20,000
लाभ	40,000

लाभ = बिक्री आगम – मजदूरी का भुगतान – कर – मध्यवर्ती उपभोग

40,000 = बिक्री आगम – 50,000 – 20,000 – 80,000

बिक्री आगम = 40000 + 50000 + 20000 + 80000

= 1,90,000 रुपए

मूल्य वृद्धि = बिक्री – मध्यवर्ती उपभोग

= 1,90,000 – 80,000 = 1,10,000 रुपए

अतः मूल्य वृद्धि = 1,10,000 करोड़ रुपए

बोध प्रश्न 2

1) राष्ट्रीय आय मापन में दोहरी गणना की समस्या का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मूल्य वर्धित विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

3.3 समग्र बचत तथा धन (सम्पत्ति) के माप

बचत तथा धन एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं, लेकिन ये समान नहीं हैं। बचत आय का वह भाग है जिसे खर्च नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में, बचत वर्तमान आय में से वर्तमान आवश्यकताओं पर खर्च का अन्तर है। जब हम एक देश की कुल बचत को उसकी राष्ट्रीय आय से विभाजित करते हैं तब हम बचत अनुपात प्राप्त करते हैं। दूसरी तरफ, धन की परिसम्पत्ति से दायित्वों के अंतर के रूप में गणना की जाती है। बचत, प्रवाह अवधारणा (समय की प्रति इकाई में मापा जाता है) है जबकि धन एक स्टॉक अवधारणा (समय के एक बिन्दु पर मापा जाता है) है। बचत को परिसम्पत्ति के संचय के रूप में अथवा देयता में कमी के रूप में लेते हैं; इसलिए बचत धन का योग है।

बचत के तीन महत्वपूर्ण माप निम्नलिखित हैं:

1. **निजी बचत (Private Saving - S_{pvt})** : यह निजी क्षेत्र द्वारा बचत है। निजी बचत निजी खर्च योग्य आय से उपभोग का अन्तर है। प्रतीकात्मक रूप से,

S_{pvt} = निजी खर्च योग्य आय – उपभोग

= (Y + NFPA – T + TR + INT) – C

जहाँ, Y = सकल घरेलू उत्पाद

NFPA = विदेशों से शुद्ध साधन भुगतान (Net factor payments from aboard)

T = कर (Taxes)

TR = सरकार से प्राप्त हस्तांतरण आय (Transfer earnings received from government)

INT = ब्याज आय (Interest income)

निजी बचत अनुपात = निजी बचत / निजी खर्च योग्य आय

2. सरकारी बचत **(Government Saving - S_{govt})**: यह विशुद्ध सरकारी अथवा बजट आधिक्य है। यह सरकारी आय का वस्तुओं एवं सेवाओं पर सरकारी व्यय पर आधिक्य है, अर्थात् बचत

S_{govt} = सरकारी आय – वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

$S_{govt} = (T - TR - INT) - G$

जहाँ,

T = कर

TR = हस्तांतरण भुगतान

INT = ब्याज भुगतान

G = वस्तुओं एवं सेवाओं की सरकारी खरीद

3. **राष्ट्रीय बचत (National Saving - S)**: राष्ट्रीय बचत एक अर्थव्यवस्था की संपूर्ण बचत है। यह निजी बचत तथा सरकारी बचत का योग है।

$S = S_{pvt} + S_{govt}$

$S = [Y + NFPA - T + TR + INT - C] + [T - TR - INT - G]$

$= Y + NFPA - C - G$

$= GNP - C - G$

उपर्युक्त समीकरण दिखाता है कि राष्ट्रीय बचत सकल राष्ट्रीय उत्पाद का निजी तथा सरकारी क्षेत्रों की वर्तमान आवश्यकताओं पर आधिक्य के समान है।

हम जानते हैं कि:

GNP अथवा $Y = C + I + G + NX$

Y का मूल्य राष्ट्रीय बचत समीकरण में रखने पर, हम प्राप्त करते हैं:

$S = [C + I + G + NX] + NFPA - C - G$

$S = I + NX + NFPA$

$S = I + CA$

जहाँ, $CA = NX + NFPA$; अर्थात चालू खाता शेष है।

इसके साथ ही,

$S = S_{pvt} + S_{govt}$

और $S_{pvt} = S - S_{govt}$

$= I + CA - S_{govt}$ (जहाँ $S = I + CA$)

अतः निजी बचत तीन तरीके से उपयोग की जा सकती है:

1. नवीन पूँजी निवेश (I) को कोष उपलब्ध कराना;
2. सरकारी बचत (S_{govt}) घाटे के लिए वित्त उपलब्ध कराना
3. परिसम्पत्ति अर्जन अथवा विदेशियों को ऋण देना।

3.4 वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद

मौद्रिक चरों की गणना उनकी प्रचलित कीमत पर की जाती है तथा वास्तविक चरों की गणना आधार वर्ष पर मौद्रिक चरों को मुद्रा–स्फीति अथवा विस्फीति से समायोजित करके की जाती है। आधार वर्ष अथवा स्थिर वर्ष का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। मौद्रिक चर में परिवर्तन, मात्रा में परिवर्तन तथा कीमत में परिवर्तन दोनों (संयुक्त) प्रभावों

को प्रदर्शित करता है जबकि वास्तविक चर, चर परिवर्तन अथवा मात्रा में परिवर्तन की सही तस्वीर उपलब्ध कराता है।

वास्तविक सकल घरेलू उत्पादः इसे मौद्रिक राष्ट्रीय आय भी कहा जाता है तथा प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह आर्थिक वृद्धि को मापने का अपर्याप्त (खराब) संकेतक है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रचलित वर्ष की कीमतों के गुणनफल के द्वारा प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद अथवा स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि को मापता है। यह प्रचलित वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को आधार वर्ष की कीमतों के गुणनफल से प्राप्त किया जाता है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि काल पर्यन्त अर्थव्यवस्था के निष्पादन में सुधार को इंगित करता है को बताता है। यह मात्रा में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

$$\text{स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{प्रचलित कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक}} \times \text{आधार वर्ष कीमत सूचकांक}$$

जहाँ, आधार वर्ष = आधार वर्ष का कीमत सूचकांक हमेशा 100 लिया जाता है।

उदाहरण 3.4: मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद को वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में रूपांतरित कीजिए।

i) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 2,50,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 250 रुपए है।

ii) प्रचलित वर्ष की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद 4,00,000 रुपए है तथा प्रचलित वर्ष के लिए कीमत सूचकांक 400 रुपए है।

हलः

i) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{2,50,000}{250} \times 100 = 1,00,000$ रुपए

ii) स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{4,00,000}{400} \times 100 = 1,00,000$ रुपए

3.4.1 कीमत सूचकांक

आधार वर्ष की कीमतों के सापेक्ष, एक कीमत सूचकांक विशिष्ट वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत के औसत स्तर को मापता है। दूसरे शब्दों में, यह आधार वर्ष के सापेक्ष प्रचलित कीमत स्तर का एक माप है।

मुख्य रूप से दो कीमत सूचकांक हैं:

1. सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक (GDP Deflator)
2. उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक

सकल घरेलू उत्पाद में सम्मिलित की गई वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों के औसत स्तर को मापता है। यह मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद से वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में रूपांतरित करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह मूल्य वृद्धि के प्रभाव को हटाता है तथा यह भौतिक उत्पाद में वास्तविक परिवर्तन को निर्धारित करता है।

यह दिए गए वर्ष में मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद से अनुपात है। दूसरे शब्दों में, यह बास्केट परिवर्तन के साथ एक कीमत सूचकांक है। प्रतीकात्मक रूप में,

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद}} \times 100$$

उदाहरणः यदि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद 21,100 करोड़ रुपए है तथा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 20,000 करोड़ रुपए है, तब

$$\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक} = \frac{21,1000}{20,000} \times 100 = 105.5$$

हम सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक के उपयोग के द्वारा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तित कर सकते हैं, अर्थात्:

$$\text{वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद} = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक}} \times 100$$

उपभोक्ता कीमत सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

उपभोक्ता कीमत सूचकांक उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं के स्थिर (निश्चित) बॉस्केट की खरीद कीमतों को मापता है। बॉस्केट में वस्तुओं एवं सेवाओं की निश्चित सूची जैसे भोजन कपड़ा, ईंधन तथा घर को रखा जाता है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की मासिक आधार पर गणना की जाती है। जब सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीतिकारक बॉस्केट में परिवर्तन के साथ कीमत सूचकांक है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक की गणना आधार अवधि में उसी बॉस्केट की मदों की लागत द्वारा उपभोक्ता मदों के बॉस्केट के प्रचलित लागत के भागफल द्वारा की जाती है। उपभोक्ता कीमत सूचकांक एक एकल सूचकांक है जिसे एक अर्थव्यवस्था में प्रचलित विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों को मापने में उपयोग किया

$$\text{उपभोक्ता कीमत सूचकांक} = \frac{\text{प्रचलित वर्ष में बॉस्केट की कीमत}}{\text{आधार वर्ष में बॉस्केट की कीमत}} \times 100$$

मुद्रा स्फीति दर (Inflation Rate)

मुद्रा स्फीति की दर वह है जिस पर कीमतों का सामान्य स्तर प्रति अवधि बढ़ता है। मुद्रा स्फीति दर को मापने के लिए कीमत सूचकांक का उपयोग किया जा सकता है। इसे किसी अवधि में प्रतिशत परिवर्तन के रूप में मापा जा सकता है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है।

$$\text{मुद्रा स्फीति दर} = \frac{P_2 \; P_1}{P_1} \times 100$$

जहाँ, P_1 पूर्व अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है तथा P_2 प्रचलित अवधि में कीमत सूचकांक का मूल्य है।

यदि सकल घरेलू उत्पाद अवस्फीति कारक पूर्व अवधि में 100 से बढ़कर प्रचलित अवधि में 112 हो जाता है तब मुद्रा स्फीति दर की गणना इस प्रकार की जाती है:

$$\text{मुद्रा स्फीति दर} = \frac{112 - 100}{100} \times 100 = 12\ \%$$

3.5 सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ

सकल घरेलू उत्पाद आर्थिक प्रगति का एक उपयोगी माप है, लेकिन आर्थिक कल्याण का नहीं। परन्तु आर्थिक प्रगति के माप के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की निश्चित सीमाएँ हैं, प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं:

1) **सकल घरेलू उत्पाद के संघटक:** यदि सकल घरेलू उत्पाद युद्ध उत्पादों (उदाहरण के लिए, टैंक, बॉम्ब, हथियार इत्यादि) के उत्पादन में वृद्धि के कारण बढ़ता है तब आर्थिक कल्याण नहीं बढ़ेगा।

2) **जनसंख्या प्रभाव की अवहेलना की जाती है:** एक देश की राष्ट्रीय आय उच्च हो सकती है लेकिन देश की उच्च जनसंख्या भी हो सकती है।

3) **कुछ लोगों के द्वारा अधिक योगदान:** देश में बहुत विषमता हो सकती है, सकल घरेलू उत्पाद उच्च हो सकता है लेकिन इसमें कुछ लोगों के द्वारा योगदान हो सकता है। इसलिए, यदि जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा सकल घरेलू उत्पाद में उच्च हिस्सा रखता है और बचा हुआ सकल घरेलू उत्पाद का हिस्सा अधिक लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है, तब आर्थिक विकास एक अर्थव्यवस्था के गरीबतम तबके तक नहीं पहुँच पाएगा।

4) **सकल घरेलू उत्पाद पर्यावरण की गुणवत्ता की अवहेलना करता है:** उत्पादन पर्यावरण में गिरावट में वृद्धि के साथ बढ़ सकता है। उच्च सकल घरेलू उत्पाद होने का तात्पर्य यह नहीं है कि लोगों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर है अगर पानी, हवा आदि अधिक प्रदूषित हैं।

5) **केवल वैध उत्पाद शामिल हैं:** सकल घरेलू उत्पाद वैध बाजारों में वस्तुओं एवं सेवाओं को उत्पादित किया जाता है तथा बेचा जाता है को शामिल करता है जिनका बाजार में लेनदेन नहीं होता है, यह निश्चित उत्पादकीय कार्यों की भी अवहेलना करता है। उदाहरण के लिए, घर में कार्य करने की सेवाएँ, अपने बच्चों की देखभाल करने तथा परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करने को सकल घरेलू उत्पाद से अलग रखा जाता है।

उपर्युक्त विचारों में, सकल घरेलू उत्पाद सामाजिक तथा आर्थिक कल्याण का एक पर्याप्त सूचकांक नहीं हो सकता है। सकल घरेलू उत्पाद तथा कल्याण धनात्मक रूप से सम्बन्धित नहीं हो सकते हैं। कई स्थितियों में, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक कल्याण में वृद्धि नहीं करता है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के घटक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) वास्तविक तथा मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 भुगतान शेष : खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन

एक देश का भुगतान शेष एक विशिष्ट समयावधि सामान्यतः एक वर्ष अथवा एक वर्ष की तिमाही में देश के निवासियों एवं शेष विश्व के मध्य सभी आर्थिक लेनदेनों का विवरण है। भुगतान शेष एक देश तथा शेष विश्व के मध्य समस्त मौद्रिक लेनदेनों का सार है, जो व्यक्तिगत, फर्मों तथा सरकारी निकायों के द्वारा बना होता है।

इस प्रकार, भुगतान संतुलन (शेष) समस्त बाह्य दृश्य तथा अदृश्य लेनदेनों का विवरण रखता है। भुगतान शेष एक खाता है (i) जो किसी देश के निवासियों को वस्तुओं एवं सेवाओं एवं अन्य अदृश्य मदों की बिक्री के एक विशिष्ट आवधिक खाते में शेष विश्व से प्राप्त करता है, (ii) अन्य देशों से पूँजी हस्तांतरण, (iii) जो इन निवासियों ने उन सभी मदों की खरीदों के आधार पर दूसरे देशों को भुगतान किया है, तथा (iv) शेष विश्व के लिए घरेलू निवासियों का पूँजीगत हस्तांतरण। इन लेनदेनों में लेनदारी प्रविष्टि तथा देनदारी प्रविष्टि दोनों हैं, देश की वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात एवं आयात और वित्तीय पूँजी एवं वित्तीय हस्तांतरण के भुगतान का विवरण रखता है। शेष विश्व से समस्त प्राप्तियाँ लेनदारी के रूप में दर्ज की जाती हैं, जबकि बाकी सभी भुगतान शेष विश्व को देनदारी के रूप में दर्ज की जाती है। आपको ध्यान देना चाहिए कि भुगतान शेष खाता हमेशा संतुलन में रहता है, क्योंकि यह "द्विअंकण बही खाता प्रणाली" द्वारा बनाए रखा जाता है। किसी देश के लिए कोषों का स्रोत अर्थात निर्यात, ऋण तथा निवेश की प्राप्तियाँ लेनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं, जबकि कोषों का उपयेाग अर्थात् आयातों अथवा विदेशों में निवेश देनदारी मदों में प्रविष्टि किए जाते हैं। भुगतान शेष में दो भाग शामिल हैं अर्थात् चालू खाता और पूँजी खाता।

3.6.1 चालू खाता

भुगतान शेष का चालू खाता उन सभी लेनदेनों जो वस्तुओं एवं सेवाओं तथा पक्षीय हस्तांतरण से सम्बन्धित है को शामिल करता है। यह वर्तमान में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान से सम्बन्धित है।

अतः चालू खाते के शेष को कुल व्यापार शेष, सेवाओं के शेष तथा एकपक्षीय हस्तांतरण के शेष के कुल योग के रूप में आकलित किया जा सकता है।
चालू खाते में शामिल मदें निम्नलिखित हैं:

1) **व्यापार शेष (Balance of Trade) :** यह केवल दृश्य वस्तुओं के निर्यात एवं आयात को शामिल करता है। निर्यात तथा आयात का अन्तर व्यापार शेष प्रदान करता है।

2) **सेवाओं का शेष (Balance of Services)** : यह सभी अदृश्य लेनदेनों जैसे सेवाएँ (यात्रा, बीमा बैंकिंग, समाचार एजेंसी सेवाएँ इत्यादि), सहायता, हस्तांतरण इत्यादि को शामिल करता है।

3) **एकपक्षीय हस्तांतरण (Unilateral Transfers)** : ये लेनदेन एक देश से अन्य देश को बिना किसी वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद जैसे सहायता, उपहार इत्यादित के द्वारा किया जाता है।

3.6.2 पूँजी खाता

यह उन सभी लेनदेनों का विवरण रखता है जो सरकार की सम्पत्ति या देयता में बदलाव का कारण बनते हैं। यह एकदेश तथा शेष विश्व के मध्य सभी पूँजीगत हस्तांतरणों जैसे ऋण तथा निवेश, व्यावसायिक ऋणों को शामिल करता है। यह निम्नलिखित को सम्मलित करता है:

1) **विदेशी निवेश (Foreign Investment)** : विदेशी निवेश दो प्रकार का होता है:

   क) **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment - FDI)**: इसका अर्थ है विदेशी नागरिकों या संस्थाओं द्वारा परिसम्पत्ति की खरीद तथा उसी समय इसका नियंत्रण प्राप्त करना, और अन्य देशों में एक फर्म द्वारा एक देश में फर्म का अधिग्रहण।

   ख) **प्रतिभूति निवेश (Portfolio Investment)**: यह एक ऐसी परिसम्पत्ति का अधिग्रहण है जो क्रेता को परिसम्पत्ति पर नियंत्रण नहीं देता है, जैसे विदेशों में शेयरों अथवा ऋणपत्रों (बॉण्ड्स) की खरीद।

2) **ऋण**: यह सभी अल्पावधि एवं दीर्घ अवधि तथा बाह्य व्यावसायिक उधारों (External Commercial Borrowings - ECB) को शामिल करता है।

3) **बैंकिंग पूँजी:** यह विदेशी नागरिकों द्वारा विदेशी करेंसी जमाओं को शामिल करता है।

कुल भुगतान शेष चालू खाता शेष एवं पूँजी खाता शेष के योग द्वारा प्राप्त किया जाता है। एक देश के चालू खाता में घाटा हो सकता है। इस प्रकार के घाटे को पँजी खाते के अतिरिक्त अथवा विदेशी विनिमय कोष में कमी के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। उसी प्रकार, चालू खाते में अतिरेक को पूँजी खाते में घाटे अथवा विदेशी विनिमय कोष के द्वारा क्षतिपूरित किया जाता है। इस प्रकार लेखांकन दृष्टि से भुगतान शेष हमेशा संतुलन में रहता है।

भारत के भुगतान शेष की संरचना

निम्नलिखित तालिका में हम वर्ष 2018–19 के लिए भारत के भुगतान शेष की प्रवृष्टियों को प्रस्तुत करते हैं ताकि आपको विभिन्न घटकों के बारे में पता चल सके:

मदें	2018–19 (दस लाख अमरीकी डॉलर में)
I चालू खाता	
1. आयात	517519
2. निर्यात	337237
3. व्यापार शेष (1–2)	– 180283
4. अदृश्य (कुल)	123026
5. चालू खाता शेष	– 257256
II पूँजी खाता	
a) बाह्य सहायता (कुल)	3413
b) बाह्य व्यावसायिक ऋण (कुल)	10416
c) अल्पकालिन ऋण	2021
d) बैंकिंग पूँजी (कुल)	7433
e) विदेशी निवेश (कुल)	30094
f) अन्य पूँजी (कुल)	1026
पूँजी खाता शेष (a+b+c+d+e+f)	54403
III त्रुटि एवं चूक	**– 486**
IV कुल भुगतान	**– 3339**
कुल मौद्रिक संचलन	– 3339

स्रोत: आर्थिक समीक्षा 2019-20

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष में शामिल मदें क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) व्यापार शेष तथा भुगतान शेष के मध्य अन्तर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.7 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने सीखा है कि राष्ट्रीय आय को मापने की प्रमुख तीन विधियाँ हैं, अर्थात् आय विधि, व्यय विधि तथा उत्पादन अथवा मूल्य वर्धित विधि है। आय विधि में राष्ट्रीय आय के माप के लिए सभी साधन आय के कुल का योग ध्यान में रखा जाता है।

व्यय विधि एक अवधि के दौरान उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय से सम्बन्धित है।

मूल्य वर्धित विधि में, एक अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के द्वारा मूल्य वर्धन को जोड़ा जाता है। राष्ट्रीय आय का मूल्य चाहे वह आय विधि अथवा व्यय विधि अथवा मूल्य वर्धित विधि द्वारा गणना की जाए वह समान होता है।

हमने यह भी चर्चा की है कि बचत, आय का वह भाग है जिसका वर्तमान समय में उपभोग नहीं किया जाता है; बल्कि इसे भविष्य में उपभोग के लिए अलग रखा गया है। बचत के तीन प्रमुख माप हैं: निजी बचत, सरकारी बचत तथा राष्ट्रीय बचत। आर्थिक प्रगति के माप के लिए, हम मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद की अपेक्षा वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद को मूल्य में वृद्धि के लिए पूर्व नियंत्रण के रूप में प्रधानता देते हैं।

बाद में हमने भुगतान शेष पर चर्चा की, जो सभी आर्थिक लेनदेनों का व्यवस्थित विवरण है जो एक देश तथा शेष विश्व के मध्य होता है। भुगतान शेष के दो घटक : चालू खाता तथा पूँजी खाता है। चालू खाता राष्ट्रों के मध्य सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात तथा आयात से सम्बन्धित हैं। जबकि पूँजी खाता पूँजी के अंतर्वाह और बहिर्वाह को दिखाता है।

3.9 बोध प्रश्न के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 3.2.1 का संदर्भ देखिए तथा उत्तर दीजिए।
2) आय विधि उत्पादन के साधनों की साधन आय की व्याख्या करती है जबकि व्यय विधि अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर किए गए व्यय से सम्बन्धित है। यह उपभाग 3. 2.1 तथा 3.2.2 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 2

1) दोहरी गणना की समस्या तब उत्पन्न होती है जब एक से ज्यादा बार लेनदेन किया जाता है। यह उपभाग 3.2.3 में संदर्भित है।
2) इस उपभाग 3.2.2 के अंतर्गत सावधानियों के शीर्षक में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 3

1) बचत के तीन माप सार्वजनिक बचत (सरकारी बचत), निजी बचत तथा राष्ट्रीय बचत है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।
2) वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद स्थिर कीमतों अथवा आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होती है जबकि मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद प्रचलित कीमतों पर आधारित किया जाता है। यह भाग 3.3 में संदर्भित है।

बोध प्रश्न 4

1) भुगतान शेष के चालू खाते में व्यापार शेष, सेवाओं का शेष तथा एकपक्षीय भुगतान में शामिल किए जाते हैं। उपभाग 3.6.1 में संदर्भित है।
2) व्यापार शेष दृश्य वस्तुओं के व्यापार को शमिल करता है जबकि भुगतान शेष दृश्य एवं अदृश्य मदों को शामिल करता है। यह भाग 3.6 में संदर्भित है। ।